रंगीला रसूल

(हजरत मुहम्मद साहब का जीवन चरित्र)

लेखक :-

पं० चमूपति एम०ए०

प्रकाशक

मोहम्मद रफ़ी

तरकारी मन्डी पो० बा०-४२०

दिल्ली-६

रंगीला रसूल

(हजरत मुहम्मद साहब वास्तविक “पवित्र” जीवन चरित्र)

लेखक :-

पं० चमूपति एम०ए०

प्रकाशक

शहीदे आजम महाशय राजपाल

प्रकाशक :—

शहीदे आजम महाशय राजपाल
(लाहौर)

मूल्य : 15.00

वितरक

मोहम्मद रफ़ी
तरकारी मन्डी पो० बा०-४२०
दिल्ली-६

नोट:
सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है।

“समर्पण”

उस महान योद्धा, साहसी, विद्वान को यह कृति समर्पित है जिसने संसार के मानव मात्र को हजरत मुहम्मद साहब के वास्तविक जीवन परिचय को प्रकाशित करा कर सही दिग्दर्शन कराया तथा जिसके निमित्त स्वयं छुरा खाकर शहीद हो गये, ऐसी उस पुण्यात्मा को मेरा अंतिम वंदन है।

लेखक -
चमूपति एम०ए०

पुस्तक परिचय

सन १९२३ में मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें "१९ वीं सदी का महर्षि" और "कृष्ण,तेरी गीता जलानी पड़ेगी " प्रकाशित हुई थी। पहली पुस्तक में आर्यसमाज संस्थापक स्वामी दयानंद का सत्यार्थ प्रकाश में कुरान की समीक्षा से खीज कर उनके विरुद्ध आपतिजनक एवं घिनोना चित्रण प्र.0काशित किया था जबकि दूसरी पुस्तक में श्री कृष्ण जी महाराज के पवित्र चरित्र पर कीचड़ उछाला गया था। उस दौर में विधर्मियों की ऐसी शरारतें चलती ही रहती थी धर्म प्रेमी सज्जन उनका प्रतिकारकरते थे। महाशय राजपाल ने स्वामी दयानंद और श्री कृष्ण जी महाराज के अपमान का उत्तर १९२४ में "रंगीला रसूल" छाप कर दिया। यह पुस्तक उर्दू में थी। इस पुस्तक के लेखक पंडित चमूपति जी थे जो की आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् थे, मुसलमानों के ओर से संभावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक में अपना नाम नहीं देना चाहते थे।। १९२४ में छपी रंगीला रसूल बिकती रही पर महात्मा गाँधी ने इस पुस्तक के विरुद्ध एक लेख लिखा। इस पर कट्टरवादी मुसलमानों ने महाशय राजपाल के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया। सरकार ने उनके विरुद्ध अभियोग चला दिया। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास का दंड सुनाया गया।हाई कोर्ट में दिलीप सिंह की अदालत ने उन्हें दोषमुक्त करार दे दिया। मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे। ६ अप्रैल १९२९ को महाशय राजपाल अपनी दुकान पर आराम कर रहे थे। तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोप दिया जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया।

भाई परमानन्द ने अपने सम्पादकीय में लिखा हैं की "आर्यसमाज के इतिहास में यह अपने दंग का तीसरा बलिदान हैं।

पहले धर्मवीर लेखराम का बलिदान, दूसरा बड़ा बलिदान स्वामी श्रद्धानंद जी का था तीसरा बड़ा बलिदान महाशय राजपाल जी का हैं। जिनका बलिदान इसलिए अद्वितीय हैं की उनका जीवन लेने के लिए लगातार तीन आक्रमण किये गए। एक युवक इल्मदीन, ने एक तीखे छुरे से उनकी हत्या करने में सफल हुआ हैं।   लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय किया की शव का संस्कार अगले दिन किया जाये। पुलिस के मन में भय बैठ गया और डिप्टी कमिश्नर ने रातों रात धारा १४४ लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जुलुस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। शव अस्पताल में ही रखा रहा। दुसरे दिन सरकार एवं आर्यसमाज के नेताओं के बीच एक समझोता हुआ जिसके तहत शव को मुख्य बाजारों से ले जाया गया। हिंदुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों से पुष्प वर्षा करी।ठीक पौने बारह बजे हुतात्मा की नश्वर देह को महात्मा हंसराज जी ने अग्नि दी। महाशय जी के ज्येष्ठ पुत्र प्राणनाथ जी तब केवल ११ वर्ष के थे पर आर्य नेताओं ने निर्णय लिया की समस्त आर्य हिन्दू समाज के प्रतिनिधि के रूप में महात्मा हंसराज मुखाग्नि दे। जब दाहकर्म हो गया तो अपार समूह शांत होकर बैठ गया। ईश्वर प्रार्थना श्री स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने करवाई। प्रार्थना की समाप्ति पर भीड़ में से एकदम एक देवी उठी। उनकी गोद में एक छोटा बालक था। यह देवी हुतात्मा राजपाल की धर्मनिष्ठा साध्वी धर्मपत्नी थी। उन्होंने कहा की मुझे अपने पति के इस प्रकार मारे जाने का दुःख अवश्य हैं पर साथ ही उनके धर्म की बलिवेदी पर बलिदान देने का अभिमान भी हैं। वे मरकर अपना नाम अमर कर गए। : **आर्य समाज से साभार**

☆पाठको को पुस्तक लिखने के कारण, इतिहास एवं महाशय राजपाल जी के बलिदान से परिचित करने हेतु जोड़ा गया है मूल पुस्तक का अंश नहीं है। पुस्तक प्रारम्भ अगले प्रष्ठ से होगी।

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने हजरत मुहम्मद साहब के जीवन को पच्चीस वर्ष के बाद से आरंभ किया है , उससे पहले का कोई वर्णन नहीं दिया गया, अतः पाठको की जानकारी के लिए संक्षेप में जन्म से पच्चीस वर्ष तक के जीवन से परिचित कराना मैं अपना पावन कर्त्तव्य समझता हूँ।

हजरत मौहम्मद साहब के पिता का नाम अब्दुल्लाह था जो अब्दुल मुत्तलिब के बेटे थे आप कुरैश खानदान से ताल्लुक रखते थे, जो अरब का एक प्रमुख वंश था तथा तमाम वंशजो में अपना प्रमुख स्थान रहता था, आपका जन्म १२ रबीउल दिन सोमवार (११ नवम्बर) सं ५६९ ई० को मक्के में हुआ। आपके वालिद (पिता) अब्दुल्लाह आपके जन्म से पूर्व की परलोक सिधार गये थे। अतः आपका प्रारम्भिक पालन पोषण आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब द्वारा हुआ, उनके मरने के बाद (तब आपकी उम्र मात्र आठ वर्ष की थी) आपके चचा हजरत अबू तालिब ने आपकी देखभाल की।

आपकी माता हजरत अमीना ने अपना दूध पिलाकर बड़ा किया परन्तु वहां के रिवाज के अनुसार कुछ समय के लिए वहां के नजदीकी गाँव में शारीरिक व बोद्धिक उन्नति के लिए एक महिला जिसका नाम हलीमा सदिया था, के सानिध्य में भेज दिया। गाँव से लोटने पर थोड़े समय बाद ही आपकी माता का देहांत हो गया। अब सारी जिम्मेवारी आपके चाचा के ऊपर आ गयी, चचा का व्यापार था, आपको भी अपने व्यापार में लगा लिया तथा बकरियां चराने का काम दिया गया। इसी तरह बकरियां चराते-चराते समय बीत गया और अपने जवानी में कदम रक्खा, आपको खुदा ने गजब का हुस्न, बांका शारीर, शुद्ध ह्रदय व दिल में ईमानदारी बख्शी, आपका सारा जीवन गरीबी में ही बीता , माँ का साया तो बचपन में ही उठ गया था। बाप का प्यार क्या होता है ? इसका तो कभी अनुभव ही नहीं हुआ।

पच्चीसवें वर्ष में एक धनी बेवा महिला खुदिजा जो उस समय चालीस वर्ष की थी, की आंख हजरत से लड़ गयी और यह भी दिल दे बैठे, इनकी भी पच्चीस साल बाद लाटरी सी खुली थी, जिस प्यार ले लिए बेचारे पच्चीस साल तक तरसते रहे, वह सारा प्यार जो पत्नी और माँ, दोनों के रूप में साँझा प्राप्त हुआ इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता था ? उस समय तो अगर खुदिजा की आयु साठ वर्ष भी होती तो भी हजरत उसका प्रस्ताव न ठुकराते।

अब आप आगे मुहम्मद साहब के पवित्र ? जीवन को ध्यान पूर्वक पढ़िए और उनके जीवन से लाभ उठाइए। क्योंकि ऐसा शिक्षाप्रद जीवन वृत्त मुश्किल स ही किसी खुदा के पैगम्बर का मिलेगा, जिस पर चल कर जन्नत ही जन्नत है। जिसमे प्रत्येक बात को सप्रमाण ही उद्धत किया गया है जिसे सभी सुन्नी मुसलमान भाई प्रमाण स्वरुप मानते हैं, अगर आप इसको दोजख का आर्ग समझते हैं तो आज ही दिए गये ईमान को वापिस ले सकते हैं क्योंकि बिना वास्तविकता को जाने किसी का मुरीद हो जाना स्वाभाविक है।

इस पूरे जीवन चरित्र को बिना किसी भेद भाव के सप्रमाण लिखा गया है जिससे साफ़ पता चलता है की जिस सम्प्रदाय की बुनियाद रखने वाले स्वयं इतने पवित्र रहे हों, जिनकी मिशाल इतिहास में अन्यत्र कहीं देखने को नही मिलती। तो उनके उपदेश और सिद्धांत कितने शिक्षाप्रद सिद्ध होंगे ? पाठक स्वयं विचार करें।

॥ओ३म॥

पैगम्बर की तारीफ़

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके ।
मैं तो सो जाऊ अपने "रंगीले रसूल" के सदके ॥

सदा बहार सजीला रसूल है मेरा,
हों लाखपीर रसीला रसूल है मेरा।
जाहे जमाल छबीला रसूल है मेरा,
रहीने इश्क रंगीला रसूल है मेरा॥

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके ।
मैं तो सो जाऊ अपने "रंगीले रसूल" के सदके ॥

किसी की बिगड़ी बनाना है ब्याह कर लेंगे.
बुझा चिराग जलाना है ब्याह कर लेंगे।
किसी का रूप सुहाना है ब्याह कर लेंगे.
किसी के पास खजाना है ब्याह कर लेंगे॥

चमन में होने दो बुलबुल को फूल के सदके।
मै तो जाऊँ अपने रसूल के सदके॥

चमूपति एम०ए०

खुदा के अंतिम पैगम्बर हजरत मौहम्मद साहब का जीवन चरित्र आरंभ

“बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम”

मुहम्मद की अजमत इसमें है कि वह खानेदार गृहस्थ पैगम्बर है मुसलमान भाई मुहम्मद को इस खुसूसियत कोबहै अभिमान के साथ पेश कस्ते हैं कि देखौ जो बात दूसरे प्रैगम्बरों में नहीं है यह मुहम्मद में है यही मुहम्मदकी फ़जीलत (तारीफ़) है; यह बात मेरे दिल में लगतीहै।

"दयानन्द" बाल-ब्रह्मचारी है, वह देवता है मैं मामूली मनुष्य उसके ब्रह्मचर्यं को कहाँ पहूँचूं?

“महात्मा बुद्ध” ने शादी की मगर घर से निकल गया, युवावस्था में औरत और बच्चों को अकेला छोडकर साधु बन गया मुझे न उस साधुता की चाह है और न उसे अख्तियार करने का हौंसला है।”**ईसा”** ने घर बार के बसाने का कोई काम ही नही किया मुहम्मद ने शादी की , नहीं ! नही !! शादियाँ कीं। हर तरह की औरतो से शादियाँ की, बेवा से, कुंवारी से, बुढ़िया से, जवान से, हाँ ! हाँ !! एक नवयुवती से भी, शादी की। हर किस्म की शादी का रंग देखा, उसके भले बुरे को पढ़ा ही नहीं बल्कि उसने अजमाया भी तथा परखा भी।

"मुहम्मद" एक अनुभवी पैगम्बर है । उसके इल्हस की ब्नियद उसका तर्जुबा है तर्जुबा भी ऐंसा कड़ुवा कि अलअमान, मुहम्मद ने उसे मीठा घूंट समझ कर पी लिया,, किस लिए ? सिर्फ सबके फायदे के लिए और दुसरो को नसीहत देने के लिए।

मुहम्मद की जिन्दगी शिक्षाप्रद है, उपदेशों से भरी हुई, और इबादतों से भरपूर, वाकई मुहम्मद “पंथ प्रदर्शक” है। मैं खानेदार ! मेरा पैगम्बर खानेदार वह मेरा गुरू और मैं उसका चेला। उपनिषदों में लिखा है गुरजनों के अच्छे गुणों को ग्रहण करों और बुरी बातों को छोड दो। इसी नज़रिये से हम आज घरबार वाले, रंगीले, छबीले, रसीले, रसूल की जिन्दगी की बाबत खानेदारी (गृहस्थाश्रम) पर एक

रसीली निगाह डालना चाहते हैं। मुहम्मदी तथा गैर मुहम्मदी सब इसको पढ़ने में शरीक हो सकते. हैं क्योंकि "मुहम्मद" तो मुहम्मदियों और गैरसुहम्सदियों अर्थात् दोनों का है।

"ब्रह्मचारी" मुहम्मद

मुहम्मद की पहली शादी २५ साल की उमर में हुई यहाँ तो आर्य समाजियों को भी मानना होगा, कि मुहम्मद ने शास्त्र के मुताबिक जिन्दगी का पहिला हिस्सा कुँवारे रहकर गुजारा, मुहम्मद ब्रह्मचारी था, और उसका हक था कि बह शादी करे। हम संबसे पहले एक नज़र मुहम्मद की उसी (बहाचर्य) अवस्था पर डालना चाहते हैं, क्योंकि दुनियां में ऐसे बदबुदार दिमाग वाले भी लोग हैं जो नाहक भलेमानसों की आदतों पर तथा उनके कर्मों पर और उनके कथन पर शक (सन्देह) करते हैं।

हम मुहम्मद को ब्रह्मचारी मानते हैं क्योंकि उसने इस बारे में अपनी शहादत आप दे रखी है, एक मुकाम पर आप कहते हैं कि एक रात मैं एक कुरैशी लडुके के साथ मिलकर रेवड़ (भेडु आदि) चरा रहा था, मैंने उस लड़के से कहा कि अगर तू रेवड की पास बानी (निगाह बानी) करे तो में जाऊँ ? और जिस काम में नौजवान लोग रात गुजारते हैं में भी गुजार आऊँ |... –

यह कहकर मुहम्मद मक्का चला गया। मगर यहाँ एक शादी की दावत ने उसकी तवज्जह (ध्यान) अपनी तरफ खींच ली और उसक्को नींद आ गई। एक और रांत वह फिर इसी इरादें से मक्का पहुँचा। मगर स्वर्गीय प्रलोभनों ने उसके दिल को अपने काबू में कर या और उसे सोते हुए सुबह हो गई। **"हयात मुहम्मदी म्योरसाहब कृत"**

हमें मुहम्मद के कौल (कथन) पर विश्वास है, क्योंकि उसे हमामीन कहा गया है। हम मानते हैं कि, उसका दिल गुनाह के नतीजे से बचा हुआ था। दो हो दफा उसे शैतान ने बरगलाया अर्थात् पथ भ्रष्ट किया मगर ईश्वरीय प्रेरणा ही इसमें मददगार सिद्ध हुई और हमारा "“रंगीला रसूल" उस गुमराहौ के गड्ढे से बाल-२ बच गया। उसने अमलन् अर्थात् शारीरिक रूष से गुनाह नहीं किया। मुहम्मद पूर्ण ब्रह्मचारी था, उसने २५ साल तक की उमर तक शादी नहीं
की और अपनी जवानी की उमंगों के झकोरों से बचता रहा।

“माई खुदीजा”

हम खुदीजा को “माई खुदीजा” ही कहेंगे, क्योंकि उसकी उम्र ४० वर्ष की थी जब वह मुहम्मद के मकान (अन्तःपुर) में आई, बल्कि अगर सच्ची बात लिखी जाए तो यों कहिये कि मुहम्मद खुद उसके घर में गये थे। मुहम्मद २५ साल के थे। शकल और सूरत में खूब-सूरत थे, नेक आदत थे, शरीफ़ घराने के ही नहीं बल्कि शरीफ़ ठिकाने के भी थे।

परन्तु खुदीजा बेवा (विधवा) थी वह कुरैशी यानी मुहम्मद की जाति बिरादरी की थी, उसके दो पति मर चुके थे, वह बाल बच्चे वाली थी परन्तु मुहम्मद और उसकी उमर का यह मुकाबला था कि खुदीजा के पास दौलत थी, जब सौदागरों के झुण्ड गैरमुल्कों में जाते थे तो यह भी अपने एजेण्ट रवाना करती थी। खुदा बरकत देता था, तिज़ारत (व्यापार) में सवाया, ड्योढा मुनाफ़ा होता था। सारा मक्का उसे जानता था, शादियों की दरख्वास्तें भी कई बांके दिलचलों ने दी थी मगर बह अपनी दौलत और हालत पर सन्तुष्ट थी, व्यर्थ में वह

दुनियाँ का झंझट अपने सिर पर मोल नहीं लेना चाहती थी। एक साल उसने मुहम्मद को एज़ेन्ट बनाकर व्यापारियों के झुण्ड के साथ भेजा, वह आमीन था, औसत से ज्यादा लाभ उठाया। मकान की छत पर बैठी खुदीजा देख रही थी कि सामने से एक शुतुर सवार आता हुआ मालूम हुआ. वह कोन था?

मुहम्मद ! मुहम्मद ने तिजारत का हिसाब दिया और अपनी उजरत लेकर रवानां हुआ। इसकी शरमदार - आँखें, जरूरत से कम बोलना, कुदरती खूबसूरती और व्यापार
का खरापन, बेतकल्लुफ की सादगी जो दिल में थी वही जुबान पर तथा वही अमल में बुढ़िया के दिल पर यह बेसाख्तगी (स्वाभाविक रुप से) असर कर गई और उसे अपनी जिन्दगी का शरीक बनाना चाहा।

खुदीजा (ताहरा) पवित्र थी। लोग उसके हुस्न के तथा उसकी दौलत के परवाने थे, यहाँ पर बह खुद परवाना बनके गिरी, फिर ऐसी कौन-सी शमा थी जो उसे गिरता देखती और चमक न उठती? मुंह फेर लेती या उससे उलटा रुख दिखाती?

खुदीजा का बाप जिन्दा था। उसकी तरफ से अंदेशा था कि वह रास्ते का रोडा बनेगा। इसी समय खुदीजा ने एक दावत की, उसमें उसने अपने और मुहम्मद के खानदान वालों को निमन्त्रित किया, शराब ढलने लगी। 'खुदीजा का बाप भी दावत में शामिल हुआ परन्तु वह हद से ज्यादा पी गया। बूढ़ा था, बहक उठा | यही वह मौका था जिसकी ताक में सब लोग थे। उसे शादी के कपडे पहना दिये गये और उसका (खुदीजा) का निकाह हो गया | जब उसे होश आया तो बह हकका बकका रह गया, मगर पक्षी पिंजरे से निकल चुका था, बड़े और बुजुर्गों का कहना मानना पड़ा, अन्तत: फिर खामोश रह गया।

"हयात मुहम्मदी म्योरसाहब कृत"

खैर "मुहम्मद" दूल्हा हुए, माई खुदीजा के पति बन उसकी जानों माल के मालिक और रक्षक बने। बचपन में गरीब हो गये थे, बहुत दिनों तक माँ की ममता का सुख न देखा था। इस औरत से ब्याह कर लेने पर दोनों मुरादें मिल गई। मुहम्मद उसे चाहे जो भी कहे, परन्तु हम तो उसे माई खुदीजा ही कहेंगे, वह हमारी माँ है ओर आर्य शास्त्रों में एक हालत में औरत को माँ कहा भी है यह माई खुदिजा की तीसरी शादी थी, माई खुदिजा से मुहम्मद की छः संताने हुई जन्मे दो लड़के और चार लड़कियाँ थी, पहला लडुका कासिम जो दो बरस का होकर मर गया और दूसरा भी जो बिल्कुल बच्चा ही था, चल बसा।

"सीरतुल्नबी' मौलाना शबली कृत"

डाक्टरों की राय है कि औरत ४० या ४५ वर्ष की उमर तक बच्चे पैदा कर सकती है मगर उस उमर के बच्चे ज्यादा दिन तक जिन्दा रहने वाले नहीं होते। मललब यह है, कि अगर बच्चे पैदा करने के लिए शादी करनी हो तो औरत की यह उमर इस मतलब के लायक नहीं और खुदीजा की उमर इस एतबार से शादी करने के लायक न थी। मुहम्मद अकेल में रहना अधिक पसंद करते थे, ख्यालात की दुनियां में मस्त रहते थे, पहाडों में, जंगलों में मैदानों में रेगिस्तानों में, घर के कोने (एकान्त) में जा बेठते और अपने दिल से बातें किया करते थे। यही पागलपन इनकी पैगम्बरी की बुनियाद (जड़) थी। अगर रोटी रोजी की फिकर होती तो यह आजादी कहां मिलती? और पैगम्बरी का दावा क्यों कर होता? खुदीजा की शादी ने ऐसी दैविक प्रेरणा मुहम्मद के साथ की कि ऐसा समय आ उपस्थित हुआ।

अरब में पाप होता था। निहायत खौफ़नाक पाप होता था और मुहम्मद का दिल नेकी के ख्यालात से भरा हुआ था, अरबी मूर्तिपूजज थे और मुहम्मद साहब ने खुले मैदान में खुले आकाश में,

बड़े-बड़े जंगलों में किसी बडी भारी ताकत का अन्दाजा किया था। इसे यकीन हो गया था कि परमात्मा एक है और उसकी कोई सूरत शक्ल नहीं हे।

मुहम्मद का हाँसला बढ़ता गया ओर धीरज का कोई उपाय न देखकर आखिर उसे ख्याल हुआ कि आत्महत्याकर लेनी चाहिए, क्योंकि इस रोने धोने की जिन्दगी से क्या फायदा? यहाँ पर खुदीजा का बुढ़ापा बहुत कुछ काम आया और कोई नौजवान औरत होती तो उसको पागल समझती और उसका साथ छोड देती आप डरती और दूसरे को भी डराती, खुदीजा ने मुहम्मद को धैर्य बंधाया। मुहम्मद को शक था कि मुझ पर जिन्नों का जादू है। यह इल्हाम नहीं बल्कि शैतात की करतूत है, खुदीजा ने जिन्नो की जाँच की और मुहम्मद को विश्वास दिलाया कि यह फरिश्ते हैं, इसका पैगाम दुरस्त है, और जब मुहम्मद ने कहा कि या तो वह दुनियाँ को बदल देगा या अपना ही खात्मा कर लेगा। तब खुदीजा ने दुनियाँ को बदलन वाल इरादे को पसन््द किया और खुद उस नये मजहब की जिसके प्रचार का मुहम्मद ने भन्सूबा ब्रांधा था, वह उसमें सबसे पहली मददगार (सहायक) बनती।

"कससुलम्बिया"

मुहम्मद को इल्हाम (खुदा का संदेश प्राप्त) के वक्त बड़ी तकलीफ होती थी। उसके मुंह से झाग आने लगते, तमाम बदन से पसीना निकल घड़ता तथा बाहर की सुध बुध न रहती थी, बहुतेरे लागों का ख्याल था कि यह मिरगी के लक्षण थे, मुहम्मद उससमय मरीज हो जाते थे, तब खुदीजा उसको सेवा शुश्रुषा करती थी, उसके बदन पर कपड़ा डालती और पानी के छींटे मारती मतलब होश में लाती।

मुहम्मद की पैगम्बरी के पहिले आमें खुदीजा का गोद में बहाये गये | यह कहानी बहुत लम्बी हैं, किस्सा यों हैं की मुहम्मद ने अपने आपको मौजूदा मजहब और इसके कानून से अलग का लिया और अपन पीरों (भक्तजनों। को भी पिछले मजहब से बागी बनते के लिए उपदेश देने लगा। इससे सबमें मुहम्मद के प्रति मुखालफ़त पैदा हो गयी था और लोग मुहम्मद की जान के दुश्मन बनगये, अरब का दस्तूर था कि "खून का बदला खून" से लेते थे | किसी खानदान के एक आदमी को किसी दूसरे खानदान का कोई आदमी कत्ल कर देता था तो इन खानदानों में हमेशा के लिए मुखालफ़त पैदा ही जाती थी, दोनों खानदान एक दुसरे की जान के दुश्मन बन जाते धर, मगर मुहम्मद के लिए एक बचाव का तरीका था | वह यह कि एक तो उसका चचा उसकी हिमायत पर था दूसरी ख़ुदीजा थीं, जिसका लिहाज सभी छाटे बडे करते थे, मुहम्मद ने मुसीबत सही, दुख बरदाश्त किये, लेकिन उस बिवी को बरकत से उसकी जान पर आँच न आई । आखिर जब मुहम्मद ५० वर्ष का हुआ खुदीजा का इन्तकाल (देहावसान) हो गया तथा चचा भी चल बसे! अब मृहम्मद अनाथ हा गय, लाचार होकर हिजरत (देश त्याग)करके मदीने चल गये।

पाठक ! इससे अंदाजा लगा लें कि खुदीजा का वजूद मुहम्मद के लिए किस कदर भला था? यहां वजह थी के इसकी मौत के बाद मुहम्मद के मकान में सिलसिलेवार बीवियां थीं और एक दूसरे से खूबसूरती में बढ़, चढ़ कर थीं। सभी प्रकार से आनन्द और आराम था। हकूमत थी तथा सभी अख्तियार था, तो भी खुदीजा की याद मुहम्मद के दिल से न भूलती थी। यहाँ तक की "आयशा" का अपनी जिन्दा सबूतों से भी वह लौ (लग्न) न थी जो मरहूमा-मगफरा (रहम की बख्शी

हुई) खुदीजा के नाम से हो रही थी। खुदीजा ने मुहम्मद को बचाया, २५ वर्ष के जमाने में ! जब तक वह मुहम्मद की बीवी बनकर जिन्दा रही. मुहम्मद को कभी भी दूसरी शादी का खयाल नहीं आया, आर्य शास्त्रों में खानेदारी (गृहस्थाश्रम) की मियाद (समय) २५ वर्ष मुकर्र है| यह समय मुहम्मद ने बड़ी पवित्रता से निभाहा, इसलिये इसे हम आर्य गृहस्थ कह सकते हैं।

अगर मुहम्मद ने खुदीजा से शादी न की होती, बल्कि उसका लड़का बनना मंजूर कर लेता, तो यह रस्म आर्य धर्म शास्त्रों के मुताबिक होती। एक मुसलमान मौलाना साहब से बातचीत करते समय हमने यही कहा तो वह हैरान रह गये और आश्चर्य चकित होकर कहने लगे "हैं""। मांये भी बनाई जा सकती हैं ? हमने कहा - हाँ हिन्दुस्तान में यह दस्तूर है कि किसी बुज़ुर्ग औरत को माई कहकर इस तरह पुत्रवत फर्ज अदा करना। इसलिए हम उसे खुदीजा कहेंगे। परन्तु वह अक्ल में, उमर में, तज़ुरबे में बीनिश (दिखने) में अनुभवी कार्यों में "माई खुदीजा" ही है।

"बेटी आयशा"

खुदीजा का इन्तकाल हुए अभी तीन महीन भी न बीते थे कि मुहम्मद ने महसूस (अनुभव) किया फि दुनियाँ में बीबी के समान प्यारी और कोई चीज नहीं है। मुसीबत बढ़ती ही जाती थी, घर में कोई ढाढस बंधाने वाला न था। बस दूसरी बीवी की तलाश करने लगे। माई सूदा, मुकगत की औरत थी। यह दोनों मियाँ बीवी मुसलमान हा चुके थे और इस ज़ुर्म की इन्होंने सजा भी बड़ी कड़ी पाई थी। अरब निवासियों से तंग आकर उन्हें अपने देश का जिसका नाम "मालूफ"

था, खेरबाद (अलविदा) कहना पड़ा था और विदेश में रहकर गुजर करते थे। जब मुहम्मद ने कुफ्फार , (काफिर) से सुलह कर ली और उनकी मूर्तियों की कीर्ति) को मान लिया (अगरचे) बाद में फिर 'उसे इस सुलह से परेशानी हुई और इसने पहले इलहाम को ‘‘शैतानी बही’’ कहकर मन्सूख कर दिया। तो दूसरे देश निकाले हुए लोगों के साथ सुकंरान और सृदा भी वापिस आ गये।

यहां आकर सुकरान का इन्तकाल हो गया और सूदा बेंवा हो गयी, सूदा की वफादारी का सबूत इससे ज्यादा और क्या हो सकता था कि उसने देश निकाले की तकलीफों को इस्लाम के लिए बरदाश्त किया ? इधर अपने पति की वफादारउधर अपने मजहब पर जान देने वाली !! इस प्रकार को

नोट :- (1) इशादातुल्सारा शरह सहीह बुखारी जिल्द, ७ मुअल्लि- मुल्तनजील । तफसीरुलजलालीन सफा ४५ जिल्ूद २, मुद्ाल्कुलतन्जील सफा २५६, तफ़सीर कबीर - तफ़्सीर कलबी।

अच्छी बीवी मिलना मुहम्मद कं लिए मुश्किल था। रहमत . पैगम्बरी के कारण उससे अपनी शादी कर ली। बूढ़े की बेवा (विधवा) स्त्री से शादी कुछ बेजा न थी दोनों एक दूसरे के प्यारे सनेक का हक़ अदा कर सकते थे। खुदीजा की जगह आखिर कौन ले सकता था ? वह भी एक उम्मीद थी, जो पूरी हुई और घर ,सूना न रहा। हम. ऊपर कह आये हैं कि गृहस्थाश्रम के नियमानुसार ‘‘मुहम्मद २५ वर्ष तक एक ही बीवी के साथ हे और वह भी दो पतियों की विधवा! जो शादी कं समय ४० वर्ष और मौत के समय ६५ वर्ष की थी, इस बुढ़िया से इस जवान की निभ गयी, यह बात मुहम्मद की पवित्रता को साक्षी है। सिनफ नाज़ुक से प्यार मुहब्बत की फिदरत में था, यह दूसरे मरदों को नेकी करने की नसीहत देता हैं, मुसीबत में मजबूर बना देता है, आफत, में साविर

(संतोष) को बढ़ाता है, सीने को उभारता है और रुह का “सकता” करता रहता है इस वक्त भी बहुत से लोग हैं जो औरत के हुस्न की रंगीन तस्वीर खाँचते हैं। और पृजनीय देवीबना देते हैं, पविश्नता की मूर्तियाँ बनाकर तसब्बुर की फिजां में उड़ते हैं, यह आलम तखील का इश्क इनके दिल दिमाग पर इफत व असमत (पाकदामन) का राज बनाये रखता हैं।

मुहम्मद ने शायराना तबीयत पायी थी। मगर खुदीजा के लिए कहना कि - **“शाली के बुढापे ने आलम मौजूदा जवानी में औरत के शबाब की बहार का लुत्फ़ न उठाने दिया”** यह कुव्वत तसव्युर का एक और ताजयाना (सख्त) हुआ, दुनिया की औरतें दिमाग से उतर गई। बहिश्त की हुरों के ख्याल आने लगे। बाद में जब मुहम्मद की मतादिद (सिलसिलेवार) शादियाँ हो गई, तब उसका दिल कसरते अज्दवाज़ (व्यभिचार) से खट्टा हो गया, चुनाचे बाद के इल्हाम में हूरों की खूबसूरती में वह मंजर जेब नजर नहींहुए। जो खुदीजा के हीन हयात (जीवनकाल) में रह रह कर कुरान की आयतों में जलवागर होते रहते थे, सूरत बखान में मजकूर होते है। अर्थात्-व्यक्त की गई सूरतों में यह बातें मौजूद हैं। इसी तरह क्वौरी औरतें (लड़कियाँ) गोरी बड़ी आँख वाली है, उभरे हुए सीने और भरे कासे को। सचमुच औरत की खूबी क्वांरपन में है।

और मुहम्मद ने क्वांरी औरत से शादी की, वह **“आयशा”** थी आयशा अबू बकर की लड़की थी, अबू बकर ओर मुहम्मद का अदायलउमर (बचपन का 'स्नेही') था। उसकी उमर और मुहम्मद की उमर लगभग एक सी थी। सिर्फ दो साल का फर्क था, मुहम्मद अबू बकर से दो साल बड़ा था। अबू बकर बहुत जल्दी बिना ,किसी हीला

हवाला (बहाने) के मुहम्मद पर ईमान लाया था और आयशा उसकी दिलबन्द थी। आयशा को उमर उस समय कोई ६-७ साल की थी।

"मुआरजुलनब्बत सफा २८ रकूब ४"

मुहम्मद ने इस कम उमर की लड़की पर जो उमर में इसकी पोती के बराबर थी, अपनी निस्बत क्यों ठहराई ? कितने ही लोगों का ख्याल हैं कि अबू बकर को रिश्तेदार बनाना था।

प्रथम तो यह कि जब अबू बकर मुहम्मद के दीन पर ईमान ले आया और उसे ख़ुदा का रसूल मानलिया, अर्थात् उसकी आज्ञा को खुदा की आज्ञा मान लिया तो इस प्रकार और निजी ताल्लुक की जरूरत ही न रही थी लेकिन मान लो अगर बह ईमान का रिश्ता कमजोर दिखाई पड़ता था तो उसकी मजबूती का सबसे अच्छा ढंग यह होता कि मुहम्मद अबू बकर की लड़की को अपनी लड़की बना लेता और उसकी शादी अपने हाथ से करता उसका जहेज (दहेज) देता और उसका बाप बन जाता। लेकिन अरब निवासी इस मसनुई तथा हकीकी रिश्तों से ज्यादा पायदार और खुशायन्दा रिश्तेदारियों के इमकान से, आशना (जानकार) न थे।

"सैय्यद अमीर अली" लिखते हैं कि-अरब में कोई औरत बीवी के सिवाय किसी और रिश्ते से किसी मर्द के साथ न रह सकती थी। मुहम्मद अपनी सियासी जरूरियात से मजबूर था, कि लगातार शादियाँ करे | आह ! (प्यारे भारत !! पवित्रता के तारे भारत !!! प्राचीन आर्यों की प्राचीन सभ्यता के भारत !!!! दुर्गादास, औरंगजेब की पोती सफीयउन्निसा को अपनी लड़की बताता है, तथा शिवाजी, गोलेवादी की असीर शहजादी को जो गनीमत (लूट) के माल के साथ उसके साथ थी, जिसे शिवाजी अपनी बेटी समझते हैं।

परन्तु जरा इधर भी ध्यान दीजिये आयशा नाजुक और हल्के बदन की थी, इसलिए पालकी उठाने में बोझ के अन्दाज से कोई पता न चला कि अन्दर आयशा है या नहीं ? आयशा अब लाचार हो वहीं बैठी रही कि अब कोई लेने आते हैं, अब कोई लेने आते हैं। आखिर इसी इन्तजार में सवेरा हो गया और कोई भी न आया। संयोग से **साफ़वान** अपना ऊँट लिए उधर आ निकला, आते ही उसने आयशा को पहचान लिया और ब्रिना कुछ बात-चीत किये आयशा के सामने ऊँट बैठा दिया, और आयशा भी उस पर उचक (उछल) कर सवार हो गईं, अन्ततः एक रात एकान्त में गुजारने के बाद फिर अपने प्यारे मुहम्मद से जा मिली।

भला इस हालत में कौन फिसकी जुबान पकड़ता ? तरह तरह के गन्दे आक्षेप लोग लगाने लगे, धीरे-धीरे मुहम्मद ही आयशा से नाराज हो उठे। इस हालत में बिचारी आयशा और कोई उपाय न देखकर नैहर अर्थात् अपने माँ-बाप के घर चली गई; आयशा को माँ उसका दिल बहलाती रहती; मगर आयशा. के दिल से गम की गाँठ दूर न होती और न ही खुलती।

इस परिवर्तन के कारण मुहम्मद के दोस्तों और दुश्मनों में तरह-तरह के मतभेद पैदा हो गये। मुहम्मद तक नाम पर दाग़ लग गया, उसके रौब में भी फर्क आ गया, अन्त में अली और उस्मान से राय ली। अली ने कहा कि आयशा की दासी से इस घटना की सफाई ली जावे, सलाह नेक थी, मगर अली के लिए यह राय बड़ी बुरी साबित हुई अयशा इस गुस्ताखों को मरते दम तक न भूली कि अली ने जो खुद मुहम्मद का दामाद है, इसकी इज्जत पर शक किया, अब अली से आयशा की विकट शत्रुता हो गई।

मुहम्मद की बेटी फातिमा, माई ख़ुदीजा की प्यारी यादगार फातिमा, जो अली से ब्याही हुई थी,इधर फातिमा का पत्ति उधर अपना दामाद "अली" है उधर चहेती बीवी आयशा है ! मुहम्मद किधर जाये और क्या करे ? आखिरकार भर में घरलू लड़ाई की जड़ जम गई। इस घरेलू लड़ाई ने मुहम्मद की मौत के बाद इस्लाम की तवारीख को लगातार खून खराबी की तवारीख (इतिहास) बना दिया। खिलाफत के लिए इस कदर खून खराबी न होती, अगर अली और आयशा का दिल साफ होता | हाँ अगर आयशा की अली से शत्रुता न होती तो !

बहुत बींवियाँ करने वालों देखो जब पैगम्बरों की जिन्दगी भी खतरे में है, अगर इस अजमत (बड़प्पन) के लोग भी अपनी गलतियों से, तथा इन बुरे कामों से नहीं बच सके, तो तुम कौन हो ? अपनी करतूत के कडुवे फलों से अपने आपको सुरक्षित समझते हो। दशरथ का घर बरबाद हो गया, मुहम्मद का दीन बरबाद हो गया, क्यों ? इसलिये कि बूढ़े होकर नवयुवतियों (कुमारियों) से शादियाँ को।

मुहम्मद आयशा के कमरे में गया और उसके माँ-बाप के सामने सारी गुजरी हुई कहानी को सचमुच सुना देने की अर्ज की, तब मौहम्मद के सामने ही आयशा को उसके माँ-बाप ने कहा कि - "अगर तूने गुनाह किया है तो तू तौबाकर, अल्लाह बख्शने वाला है, रहम करने वाला है और अगर तू बेगुनाह है तो तू अपनी बेगुनाही का इजहार कर "। आयशा थोड़ी देर तक चुप रही। अन्त में बोली, "सब्र ही. मेरा जवाब है, परमात्मा मेरा मददगार है, मैं अगर अपने आपको बेगुनाह कहूँ तो कोई मानेगा नहीं , तौबा करूँ भी तो किस कसूर से ? परमात्मा जानता है कि मैं "बेगुनाह" हूँ "।

मुहम्मद अपने दिल से आयशा का चाल चलन जानता था। और उसका कायल था, लेकिन लोगों को भी तो कायल करना था |

आखिर का अपंन आपको इल्हाम की सूरत में डाला और अपना मुँह कपडे से ढक लिया तथा वह कुछ देर जाहिरा बेहोश पड़ा रहा, आखिर अपने माथे से पसीना पोंछता हुआ उठा और कहा -

"आयशा ! खुशी मना !! अल्ला ने तेरी बेगुनाही की साक्षी दी है"

आयशा का खोया हुआ सौभाग्य फिर से मिल गया। लेकिन आक्षेप लगाने वालों पर शामत आ गयी, इल्हाम पर इल्हाम होने लगे, आक्षेप लगाने वालों पर तरह-तरह की. बोछारें पड़ने लगीं आखिर उनके लिए सजा मुकर्रर हुई, कि उन्हें ८०-८० काड़े लगाये जायें। मरदों' के साथ-साथ एक औरत पर भी यह कोड बरसाये गये।

"सुरह अन- नूर-४ (कुरान)" में रसूल और रसूल के खुदा का गम व क्रोध अब तक लिखा चला आता है ! बदजुबान लोगों की जुबानें उनके मुंह में घुसेड दी गयीं, अब जरूरत इस बात की हुई, कि हरम की फरमाइश की जाये, क्योंकि ताली दो हाथों से बजती हैं। वह खिदमत भी अल्ला मियाँ ने कबुल की और तब "सूरये अखराव उतरी" कि–

"ऐ पैगम्बर की बीबियों ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परमात्मा से डरती हो तो अपने कौल (कथन) से न फिरो ताकि वह लालच न करे, जिसके दिल में मरज है, और कहा गया है, कौल और तवारीख मारूफ अपने-अपने घरों में रूकी रहो और न दिखाती फिरो श्रंगार जैसे ज़हालत -के जमानें की औरतें करती थीं"।

आखिर मुहम्मद को अपनी बीबियों को आफ ताकीद करना, तथा! तम्बीह देना बाकी जौजियात व लवाजमात के खिलाफ था। अल्लामियाँ स्त्री पुरूष दोनों का बुजुर्ग है। उसको बीच में डाला और जो चाहा वह उससे इल्हाम के रुप में कहलवाया। इस तरह

आयशा और मुहम्मद में पुनः एकता हो गई, और आयशा का घर भर में राज्य हो गया, परन्तु इसके बाद फिर किसी युद्ध में आयशा साथ न ले जाई गई।

इसके बाद आयशा के दर्शन आखिरी दर्शन हैं। जो इसके पति कौ मृत्यु शैय्या पर हुए हैं। मुहम्मद ने. अपने आखिरी मर्ज में जो मरजुल्मौत (मौत की बीमारी) साबित हुई, अपनी बौबियों से मंजूर करा लिया था कि अब में आयशा ही कं घर में रहा करूँगा और इसी मकान में अक्सर आयतें उतरा करती थीं, वही खटिया थी, वही बिस्तर था वही लिहाफ था। यह मकान मुहम्मद को सब मकानों से ज्यादा प्यारा था।

बीमारी के समय में मुहम्मद कब्रिस्तान को गया और अपने मरने का यकीन करके घर लौटा। आयशा भी इत्तिफाक ते सिरदर्द से दुखित थी, वह कराह-कराह कर कह रहीथी। मेरा सर ! मेरा सर !!

मुहम्मद बोल उठे आयशा ! यह शब्द मुझे कहने चाहिए। आयशा सुनते ही चुप हो गयी ! मुहम्मद को जराफ़त(मजाक) सूझी और कहा ! आयशा क्या तुम पसन्द न करोगी की तुम्हारी मौत मेरे जीते जी हो, जिससे मैँ तुम्हें अपने हाथों से दफन करूँ और तुम्हारी कब्र पर दुआ कहूँ ? आयशा ने नाक भों चढ़ा ली और जवाब दिया कि यह किसी और को सुनाओ, मैं समझ गई, मेरे घर को मुझसे खाली कराने और किसी (मुझसे भी) खूबसूरत पुतली (सुन्दर स्त्री) को ला बसाने की आरजू आपके मन में हैं। मुहम्मद को जबाब के लिए फुरसत कहाँ थी ? न ही इतनी ताकत थी कि जवाब दे सके आखिर मन्द हंसी (मुस्कुराहट) में ही बात को टाल दिया|.

"हयात मुहम्मदी म्योरसाहब कृत"

पाठक समझ गये होंगे कि एक नवयुवती बीबी को अपने पीछे छोड़ने का ख्याल मुहम्मद के लिये किस कदर परेशानी का कारण था ? पर हाय! यह गिला मंजर !! हसरत नाक मंजर !!! इबरत नाक मंजर !!! मस्जिद का आंगन है। बीस साल की जोरू जो बांसठ साल के शौहर का सिर अपने घुटनों पर लिए हुए बैठी है। मुहम्मद उसका चबाया हुआ दातुन मुंह में देवे हैं और इस क्षणिक शरीर से बाहर हो जाते हैं | उसके बाद आयशा को अबू बकर कहता है कि २० वर्ष की विधवा आयशा गुझे तुझ पर रहम आता है, तेरी_जवानी पर रहम आता है, तेरी उमंगों पर, तेरी हसरतों पर, तेरे हुस्न पर तथा तेरी सूरत पर रहम आता है, मेरी आँखों में वह आसूँ हैं जो किसी बाप की आंखों से अपनी लड़की को विधवा होता हुआ देख करकं बेअख्तियार निकल पड़ें | मगर करूँ कया ? मैं तुझे अपनी लड्की कहकर सिसकता हूँ , जबकि मुहम्मद के लिए मेरा मन कुछ नहीं कहता।

तवारीख जेबुल्लाह पेज १६६ गरदारिजुल्फतूहा रकूब ४, बा १२आदि।

“सदा सुहागिनें।”

अबू बकर हज़रत मुहम्मद साहब का दावाँ हाथ था तो मौहम्मद उमर बायाँ ! वह इतनी आसानी से मुसलमान न हुआ जैसे अबुबकर, मगर जब हुआ तो पूर्ण विश्वास के साथ हुआ। अब वह अपने मजहब के लिए बराबर लड़ने मरने को तैयार रहता था।

अबू बकर दिलेर था, अकलमन्द था, इसके बरखिलाफ़ (विरूद्ध) मौहम्मद उमर जोशीला था, बह बहुत जल्दी गुस्से में आ जाता था, उस समय उसे अपने काबू में कर लेना सहज ने था।

यही मिजाज मौहम्मद "उमर" से उसकी लड़की "हफ़्सा" ने पाया था। वह भी किसी के रोके न रूकती थी, इसको शादी "ख़नीस" से हुई थी, जो लड़ाई (गिजवाबदर) में मारा गया, ६-७ भहीने तक वह विधवा रही और कोई भी मुसलमान उससे शादी करने के लिए तैयार न था इस पर उमर ने पहले अबू बकर से निकाह करने को कहा परन्तु उसके इन्कार करने पर फिर उस्मान से निकाह के लिए दरख्वास्त की, परन्तु इन दोनों ने इन्कार कर दिया क्योंकि "हफसा" का सँभालना कोई मजाक या खेलन _था, इस पर उमर बहुत बिगड़ा और अन्त में मुहम्मद के पास हफ़्सा.के निकाह का प्रस्ताव लेकर आया मुहम्मद ने मेहरबानी से उसे अपनी स्त्री बनाना मंजूर कर लिया।

इस तरह जो रिश्ता मुहम्मद का अबू बकर से था वही उमर से भी हो गया। दोनों बराबर वफादारी से इस्लाम का प्रचार करने लगे और अपनी लड्कियों की तोफ़ैल मुहम्मद के मातहत बन गये। ऐसे ही गिजवाबदर के एक और शहीद अबींदा की बीबी ज़ेनब थी, अबीदा रिश्ते में मुहम्मद का भाई था उसकी बेवा औरत से भी मुहम्मद ने शादी क़र ली | जैनब ने बड़ी सखी (दिलावर) तबीयत पायी थी, इससे इसका नाम "उम्मुलमसाकौन" पड गया।अब अल्लमा इब्तिदाई (आरम्भिक) मुसलमानों में था। वह "हबश" की हिज़रत में अरब से निकाल दिया गया था ! जब मुहामद ने मदीना में डेरा डाल दिया तो वह वापिस आ गया, "उहद" की लड़ाई में वह घायल हो गया था। मगर बाद में अच्छा हो गया, जब "बनिसाद" पर इस्लाम ने चढ़ाई की तो यह उसका सेनापति बनाया गया- था, वहाँ वह पिछले घावों की कमजोरी के कारण फिर

बीमार पड़ गया और उसकी मौत हो गयी। मुहम्मद को अपने रिश्तेदारों से सहानुभूति थी वह उसकी विधवा औरत "हिन्द" के

पास जा करता था, हिन्द थी बूढ़ी मगर बडी खूबसूरत् थी। मुहम्मद ने उससे शादी करने का इरादा ज़ाहिर किया, उसने बुढ़ापे का बहाना किया, तब पैगाम्बर ने फ़रमाया में भी तो बूढ़ा हूँ। बुढ़िया ने कहा कि बाल बच्चे हैं, मुहम्मद उनका भी वारिस बनां और बुढ़िया को अपने घर ले आया।

मदीना मस्जिद के साथ इस समय तक ५ कोठरियाँ पहले ही बन चुकी थी. इनमे हर एक में मुहम्मद की एक एक बीबी रहती थी ! मुहम्मद बारी-२ एक एक रात, एक एक दिन, एक एक बीबी के पास काट देता था। आखिरी कोठरी हारिशकी थी, जब मुहम्मद के घर नई बीबी आती थी, तो उसे हारिश को कोठरी में ठहराया जाता था और हारिश के लिए दूसरी नई कोठरी तैयार करायी जाती थी, वह बेचारा चुपके से अल्हदा रहने का .इन्तज़ाम कर लेता था। एक दफा मुहम्मद को खुद शर्म आयी और कहने लगा कि आखिर हारिश भी क्या कहता होगा ?

"रा० आ० सैयद अमीर अली" फरमाते हैं कि यह सब विधवायें जिन्हें मुहम्मद की स्त्री होने का घमंड हुआ, ये सभी बेकस थीं, जिनके खाबिन्द(पति) इस्लाम की सेवा करते करते शहीद हो गये थे मुहम्मद का यह फर्ज था कि उनके गुजारे का इन्तजाम करता, वह उसका कार्य जरूरी था परन्तु उसका अपना गुजारा पहले ही तंगी से चलता थाउस पर उसने अपनी रोजी पर और भी बोझ ले लिया तथा खर्चे की जिम्मेदारी और बढ़ा ली, और आमदनी की सूरत वही रही।

मुल्क-मुल्क का रिवाज है। मुमकिन है सैयद अमीर अली का कयास (कथन) सही हो। अरब में रसालते मुहम्मद 'के ज़माने में कोई औरत किसी मर्द क्केपास सिर्फ ज़ोरू बनकर ही रह सकती हो। वरना हिन्दुस्तान की रसम तो यह है कि ऐसे धर्मात्मा लोग परायी

औरतों को धर्म की बहिन बना लेते हैं, जिससे उनका गुजारा भी चल जाता है और दीन भी बरबाद नहीं होता।

मुमकिन है सारे मुसलमानों में कोई और विधवाओं का पालन कर्ता हो सकता हो, कोई कुंवारा या रंडुवा उनको अपनी स्त्री के रूप में ले जा सकता हो और यह मेहरबानी का मौर (सेहरा) सिर्फ मुहम्मद के सिर बंधा हो, हमारी तुच्छ बुद्धि में अगर मुहम्मद उन्हें बहन बना लेता तो भी काम चल जाता और अगर शादी जरूरी थी तो किसी कुंवारे से करा देता। अपना अपना मजहब है। हो सकता है कि मुहम्मद को यही तरीका पसन्द आया हो कि बीबियों से अपना घर भर ले, ६० वर्ष का बूढ़ा ५-५ बीवियां ! खैर बीवियों से चहल पहल तो रहती ही होगी, मौज से रात-दिन कटते होंगे, सिनफ नाज़ुक के साथ बूढ़े का ताल्लुक दुरूस्त है।

"बहुरिया"

हम ऊपर कह चुके हैं कि जैंद नाम का एक लडका खुदीजा का ईसाई गुलाम था उसने मुहम्मद की मजहबी और दिली मुश्किलें दूर की थी इसलिए मुहम्मद को उससे खास प्यार था, चूंकि खुदीजा ने वह गुलाम उसे ही दे डाला था और मुहम्मद ने उसे अपना मुतबन्ना (लड़का) बना लिया था। ज़ैद भी मुहम्मद से अधिक प्रेम करता था, एक बार जबकि उसका बाप उसे लेने आया तो उसने जाने से साफ इन्कार कर दिया क्योंकि मुहम्मद रसूल भी और बाप भी (दोनों) थे, इसलिए -वह वहां अकेले वालिद (बाप) के पास जाकर क्या कर्ता ? उसकी पहली शादी "उम्ऐमन"हुई थी। जिसकी उमर ज़ैद से भी दुगनी थी, लेकिन उसेखुद पसन्द करने वाले बाप (मुहम्मद) के हुक्म से

लाचार होकर निकाह करना पड़ा। इस औरत से एक लड़का हुआ जिसका नाम "उसामा" था, ज़ैद की दूसरी शादी "ज़ैनब" से हुई, ज़ैनब कुरेशी खानदान से थी और मुहम्मद की फ़ुफेरी
जाति बहन थी।

एक दिन जेनब, ज़ैद, के न होने पर बैठी थी उसने रसूल (जो उसका ससुर भी था) की आवाजसुनी तो जल्दी से उन्हें भीतर लाने का प्रबन्ध करने लगी मुहम्मद की निगाह उसके सुन्दर बदन पर पड़ी, बस फिर क्या था ? दिल पर एक दम बिजली सी गिर पड़ी और
मुँह से निकला आह ! सुभान अल्ला!! तू कैसी-२ खूबसूरती की कारीगरी करने वाला है ? जैनब ने यह शब्द सुन लिए और दिल हो दिल में पैग़म्बर के दिल में कब्जा पा जाने ख़ुशी मनाने लगी। ज़ेद से शायद उसकी न बनती थी। वह लाख मुहम्मद का वारिस हो, भई आखिर था तो गुलाम ही।

जब ज़ैद घर पर आया तो उससे ज़ैनब ने इस माज़रे का जिक्र किया। बस ! फिर क्या था इस आप मुहम्मद की शादी की बातचीत (अकीदत) समझिये या शायद उसका दिल ज़ैनब से पहले ही खट्टा हो गया हो, अतः वह दौड़आ दौड़ा मुहम्मद के पास गया और अपनी बीबी को जिस पर मुहम्मद का दिल आ चुका था। तलाक देने पर राजी हो गया, मुहम्मद ने रोक कर यह कहा, आपस में खुशी से गुजर करो, लेकिन ज़ेद ऐसी बीबी का पति बनकर नहीं रहना चाहता था जो दुसरे को दिल दे चुकी हो।

उसने जैनब को तलाक दे ही दिया, और ज़ैनब मुहम्मद के पीछे पड़ी कि मुझे भी अपनी खिदमत में ले लीजिए। मुहम्मद को पेशोपेश से नाहक बदनामी होगी, आखिर वही" (इल्हाम) ने सब काम तै कर दिया सुरह उतरी -

“खुदा ने इन्सान को दो दिल नहीं दिये, न तुम्हारी गोद के लिए बेटे अपने बनवायें हैं। जो तुम कहते हो, यह तुम्हारे मुंह से निकला है। मगर अल्ला असली बात जानता है, वह रास्ता ठीक दिखाता है तुम्हारे वारिसों को चाहिए कि वह अपने बाप के नाम से मशहूर हों और जब तूने एक ऐसे बन्दे से जिस पर अल्ला का भी फज़ल है, तेरा भी फज़ल है, कहा कि तू अपनी बीबी अपने पास रख और अल्ला का खौफ़ कर और तूने अपनी छाती में छुपाया जो अल्ला कि मरजी थी कि जाहिर हो और तू इन्सान से डर, हालांकि अल्ला ज्यादा काबिल है, डरो मत, जब ज़ैद ने तलाक की रसम पूरी कर दी तो हमने उससे (मौहम्मद से)ब्याह दिया, ताकि मोंमिनों को इसके बाद अपने मुतबन्नों (माने हुए लड्कों) की बीबियों से शादी करना जुल्म न हो बशर्ते कि तलाक की रसम पूरी हो चुकी हो और अल्ला का हुक्म जरूर पूरा होगा ”

सूरयेअखरान रकूब-५

मुहम्मद तुममें से किसी का बाप नहीं है। वह अल्ला का रसूल है और खातिमुलमरसलीम" हैं और अल्ला सब कुछ जानता है।

यह शब्द हमने इसलिए लिखे हैं ताकि मुहम्मद के दिल का पता (जानकारी) पाठक लगा सकें, जैनब की जियारत के बाद. मुहम्मद ने झूठ मूठ ताअम्मुल जाहिर किया वरना दिल में इश्क की आग भड्क गयी थी तथा जो हर समय भड़क रही थी ‘‘वही’’ (इल्हाम) होता गया। और मुहम्मद ने उसके बाद ज़ैनब के पास पैग़ाम भेजा कि -

"अल्लाह ने तुझे मुझसे मिला दिया है। इसलिए अब निकाह की कोई जरूरत नहीं है"।

जहां अल्लाह दिल मिला दे, वहाँ निकाह पढ़ाने चाले मौलवियों और काज़ियों का बीच में न पड़ना मज़ाक नहीं तो और क्या है ? सब लोगों को खुश करना जरूरी था
इसलिए कह दिया कि -

"अल्लाह ने निकाह पढ़ा है और जिब्राइल उसका गवाह है. । और इन दो शर्तों के अलावा निकाह के लिए और शर्त ही क्या है" ? "रंगीले रसूल" का यह रंग कहावत अजीब है, बेटा ! बेटा न रहा, बहू बहू न रही | अब पाठक समझ सकते हैं कि क्यों मुहम्मद को किसी औरत 'को माँ या बेटी बनाने में झिझक थी ? जब माने हुए लड़कों मुतबन्नों के साथ वह सलूक नहीं हो सकता जो हकीकी (पैदायशी) औलाद के साथ होता है और उनकी बीबीयाँ तक मुहम्मद के लिए हलाल हो सकती हैं, तो धर्म की बेटियां, बहिनें क्यों कर बच सकतीं हैं ?

तफसीर हसेनी आयत मजकर खूरा. जमकुर,

उस वक्त के मुसलमान तो खामोश नहीं हैं तवारीख (इति-हास) का फ़तवा यही है कि मुहम्मद ने बेज़ा किया। उसकी "वही" (इलहाम) वेज़ा ! पैगम्बर मुल्जिम !! उसका इल्हाम मुल्जिम !!! अल्लामिया और उसका जिब्राइल मुल्जिम!! !

ऐसा नहीं है कि मुहम्मद अपने गुनाह न जानता था। बल्कि वह जानता था कि अगर उसकी बेहुदगीयाना नज़र ज़ेनब पर न पड़ती या जैनब ने ही अपने बदन को पूरी तरह छिपा लिया होता तो दिन-दहाड़े यह अन्धेर न होता जो हुआ अत: अब तो जो हो गया , सो हो गया अब आगे देखो-

पहले तो इसे (मौहम्मद को)अपने ही हरम का ख्याल आया । लोग आजादी से उसके घर आते जाते थे । उसकी बीबियों से बातचीत होती थी सम्भव है किसी सर्मय पर

यही मागला किसी मुसलमान के ऊपर गुजर जाये, जैसा कि पैगम्बर पर बीत चुका हं, और मुमकिन है कि मुहम्मद को कोई बीबी ऐसी ही होनहार निकल पड़े जैसा कि ज़ैद की बीबी साबित हो चुकी है। इसलिए इसका प्रबन्ध भी आगे 'के लिए हो जाना चाहिए। ऐसा सोच कर हज़रत ने दूरन्देशी के दर्पण में झाँका और"वही" (इल्हामी शक्ति) की जंजीर हिलाई और काम पूण किया_ ! सूरह उतारी गई, देखिए-

"ऐ मोमिनों !! रसूल के मकान में न जाओ जब तुम्हें कूछ पूछना हो तो परदे की आड् से पूछ लो यह तुम्हारे और उनके दिलों के लिए बेहतर होगा। यह मुनासिब नहीं कि तुम रसूल के दिल को दुखाओ और न यह कि उनके बाद कभी भी उनका बीबीयों से शादी करो, रसूल की बीबियां मौमिनों की माँयें. (मातायें) हैं

"सुरह अखराब रंकूब-५'*

इस इल्हाम का आखिरी जुमल!। (वाक्य) मुझे बहुत भाया, मैं खुद उन्हे अपनी माता कहता हूँ। आगे चलकर फिर कहते हैं -

"ऐ रसूल अपनी .बीबियों और लडकियों तथा मोमिनों की बीबियों से कह दे, कि वह अपने ऊपर दामन का एक हिस्सा डाले लिया करें | फिर अपनी आँखों पर काबू रकखें. और अपनी हया कौ हिफाजत करें तथा अपनी छावी पर परदा रक्खें और अपनी-अपनी लज्जा की हिफ़ाजत करें। और कवायद

(कानून) बनायें कि पड़ोसिनों के घर में किसी तरह दाखिल न हों जिससे उनके काम में बाधा न पड़े"।

"सुरह अखराब रकूब-६"

अगर यह कायदे काटुन जैनब के घर जाने से पहिले अनाये जाते तो जैनब का घर .बच जाता और मुहम्मद के नाम पर दाग़ भी न आता। मगर क्या परदे से मामिनों को उनकी करतूतों से बचा लिया ? | बुरे काम के चाल चलन की सच्ची दवा दिल का साफ हाता है अगर मुहम्मद इस पर ज्यादा जोर देते तो शायद अपने दीन और दीन के मानने वालों को ज्यादा बेकसूर छोड जाते। म्योर साहबका एक जिक्र किया है जों हज्ज के लिए मक्का गयी थी और अरब ऊे व्यवहार का आखों देखा नक्शा इस प्रकार खींचती है -

"औरतें अक्सर १०-१० शादियाँ कर लेती हैं। जिन्होंने दो-दो खाविन्द किये हैं उनकी तादाद बहुत कम है जो अपने पति को बूढ़ा होते देखती हैं या दूसरे से उसकी आँख लड् जाती है तो वह मकके शरीफ की सेवा में हाजिर होती है और मामला-फैसला करार अपने पहिले पति को छोड् देती हैं और किसी दूसरे से जो जवान तथा खूबसूरत हों उसके साथ प्रेम पैदा कर लेती हैं। यह हैं परदे की बरकात"।

"हरम का सिंगार"

मौजूदा जिलद का मजमून रसूल का दस्तूर खानदानी (गृहस्थ विषय) है इसलिए हमने किसी दूसरे मजमून को इसमें दाखिल नहीं होने दिया, मगर इसमें इत्तेशना होगी, क्योंकि अब जिन असमतमआब को

मुहम्मदी सिर्फ जौजियत अदा करने लगे हैं, वह केक्ूल यहूदिन है। मुहम्मद के इसरार (हठ) के बावजूद इसने अज्दवाज (व्यभिचार) से इन्कार किया।

पाठकों के लिए इसका कारण समझना कठिन होगा। अगर उन्हें मुहम्मद और अहले यहूदियों के आपस में मेल जोल का थोड़ा सा हाल सुना दिया जाये तो अच्छा होगा देखिये हिजरत के बाद मुहम्मद को यहूदियों से तरह-तरह मजहब की तारीफ की और अपने मजहब की हकक्कानियत का सर्टीफिकेट भी उन्हीं से लिया और बाद में जब उसके मददगारों की संख्या बढ़. गयी तो वही यहूदी मुहम्मद की बुराई का कारण बने जो काँटे की तरह दिल में खटकने लगे एक दिन आया जब उनका मुसहारा (घेराव) हो जाना सफल हुआ तब उन्होने माफी मांगी तो फैसला हुआ कि उन्हें कत्ल कर दिया जाये। सैंकड़ों यहूदी जरा सी देरमें तलवार के घाट उतार दिये गये। जिनमें एक औरत को भी उनके फैंसले पर कत्ल कर दिया गया।

मेहरबानी का सलूक एक खूबसूरत औरत के साथ, हुआ। जिसका नाम "रेहाना" था, उसे पहिले से ही सबके बीच से हटा दिया गया था, क्योंकि वह सुन्दरता में बढ़ी-चढ़ी
थी, जो मुहम्मद के लिये रिजर्व थी। मुहम्मद ने उससे शादी की दरख्वास्त को मगर उसने नामन्जूर कर दिया , उससे कहा गया कि वह इस्लाम कबूल कर ले, परन्तु वह इस पर भी राजी न हुई। आखिर मुहम्मद ने उसे लौंडी(रखैल) बना लिया और इसी हालत में बह कुछ दिन तक जीती रही मगर बहुत साल नहीं, आखिरकार वह अपनी कौम और अपनी खोई हुई आबरू के गम में घुल घुल कर मर गयी। बनीमुस्तलक पर युद्ध करने का जिक्र हम आयशा के पीछे रह जाने और तोहमतों (आक्षेपों) का निशाना बनने के समय कर चुके हैं। इस

मुहिम में और मालोअस्बाब के साथ "जोएरिया" नामक एक यहुदिन और आयी थी, उसकी लगायी तब मुहम्मद के पास हुक्म भेजा गया, मुहम्मद ने कीमत बढ़ाने के बजाय पहली कीमत देकर ही उसे अपनी बीबी बना लिया ज्यों ही "जोएरिया" मुहम्मद के कमरे में थाई त्यों ही आयशा ने उसकी सुन्दरता देखकर ताड़ लिया कि यह औरत अब वापिस न जायेगी। यह खटका पैदा हुआ हो या न हुआ हो परन्तु वह समझ गयी थी कि एक सौत। और बढ़ने को है और यही हुआ भी !

"खैबर" भी यहूदियों की एक बस्ती थी। जिस पर मुहम्मद ने चढ़ाई की और उसे फ़तह कर लिया जिसमें उनका सरवर "कनान" भी मारा गया बस उसकी बीबी हाथ आई मुहमद ने उससे भी शादी का इरादा किया वह राजी हो गई। अब मदीने वापिस जाने की ताव किसे ? वहीं पर मिट्टी के ढेर बनाकर दस्तरखान बनाये गये और उन पर म़जूरों, मक्खन, दही की दावत कौ गई। नई दुल्हन को सवारा गया और मुहम्मद उसे एक कोठरी में ले गये तथा मुहम्मद के विश्वासी लोगों ने उनके खेमें के आस पास पहरा दिया कि कहीं बेदीन औरत अपने पति का बदला न चुका बैठे ? मगर ऐसा नहीं हुआ। उस स्त्री के माथे पर जख्मका निशान था।

जब मुहम्मद ने उस जख्म के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया कि मैने एक दफ़ा रात को ख्याब में अपनी गोद में गिरते हुए चाँद को देखा और इस ख्वाब का माजरा मैंने अपने पति से कह दिया, पति को शक्न हों गया और कहने लगा कि -

"हरामज़ादी- पैगम्बर के साथ शादी करना चाहती है"

बस !' फिर क्या था उसने गुस्से में आकर जोर से मेरे माथे पर कोई लोहे की सीकं दे मारी जिससे यह घाव पैदा हो गया। पाठक ! कु

;bdछ समझे, जिसके दिल में पहले से ही मुहम्मद बसा हो उसकी नेक चलनी के लिए. क्या कहा जावे ? मौहम्मद खैबर से मदीने वापिस आया तो वहां फिर मुहम्मद ने आबूसफियां की लड़की **"उस्महबीबी'** को अपनी स्त्री बनाया था। '

सन् ६२६ ई० मे मुहम्मद ने काबा का हज़ किया। यह मुहम्मद का पहला हज्ज था। जिसकी आज्ञा काबे, के पुजारियों ने मुहम्मद को दी थी इस मौके पर भी मुहम्मदमे अपनी करतूतों से हाथ न खींचा।

"मेमूता" नामक उसके चचा अब्बास की विधवा स्त्री वहां मौजूद थी जिसकी उमर २६ वर्ष की थी ओर वह रिश्ते में भी मुहम्मद के नजदीक की थी, इसीलिए अपने चचा के कहने सुनने पर मुहम्मद ने उसे भी अपने घर में रख लिया। मदीना की मस्जिद में जहां पहले नौ कोठरी थीं अब दसवीं भी तैयार हों गई।

यह तो मुहम्मद की मनकूह (ब्याहता) बीबियाँ थीं जिनको कुरान की रूह से मुहम्मद ने दाहिने हाथ से हासिल किया था , बाकी जो **लौंडियाँ (रखैल)** थी बह सब इनके
अलावा थीं।

"मारिया"

सन् ६२८ ई० में मुहम्मद ने अपना गवर्नर लकोकस (मिस्त्र) के पास भेजा परन्तु लकोकस ने मौहम्मद के पैगम्बरी वाले का रिश्ता कायम करने पर जरुर राजी हो गया, उसने दो लौंडिया भी मुहम्मद को भेजीं उनमें से एक का नाम "मारिया" (1) था।
मारिया को मुहम्मद की अन्य बीबीयों की तरह मस्जिद की कोठरी में जगह न मिली। क्योंकि यह लौंडी थी, उसके लिए एक अलग से बाग

तैयार किया गया जहां मुहम्मद कभी-कभी जाते थे और उसके साथ समय बिताते थे।

मारिया के बारे में मुहम्मद पर एक तोहमत (आक्षेप) लगायी जाती है कि लॉंडियाँ रखना कुरान को रुह से जायज (2) हे ? मुहम्मद के घर में लौंडियां थी उन पर ना तो मुहम्मद की बीबियों ने एतराज किया और न मुहम्मद के पीरों (अनुयाइयों) ने।

एक दफ़ा कहीं से तीन लौंडियाँ आई तो मुहम्मद ने १-१ अपने ससुरों अबू बकर और उस्मान तथा एक अपने दामाद अली को बतौर भेंट के दीं , आज की दुनियाँ उसे शरमनाक ढिटाई ही कहेगी, कि अपने दामाद और ससुरों के साथ ऐसा मजलिसी याराना-बर्तावा ? शाबास मुहम्मद !

हिन्दुस्तान में खुसर (ससुर) पिता के दरजे का होता है और दामाद बेटे के दरजे पर। इस प्रकार इज्जतदार बजुर्गो और अजीजों को लॉंडिया देना कोई भी भलामानस भला नहीं कहता लेकिन उस जमाने में अरब के कुछ तौर तरीके 'फरिश्ते की -शहादत(गवाही) से एक चीज जायज कर दी तो कौन है गैर मुस्लिम (काफ़िर) जो इस्लाम के पैग़म्बर पर एतराज करे कि यह तो तुमने नाजायज काम किया।

(1)हदीस मुस्लिम तफसीर हुसैनी,।

(2)सूरये निसाँ रकूब-३,।

गजब यह है कि अब मुसलमानों को भी मुहम्मद के इस तर्ज (अमल) का काम खटकने लगा है। सैय्यद अमीर अली इस बात को बगैर डकार लिए पी गये। ग़ैर मौलाना शिबली इसकी हालत ही बदल देते हें उनकी नजर में मुहम्मद के मकान में यह बात हुई ही नहीं कुरान में एक सूरह आयी है देखिये- “या रसूल ! तू क्यों अपनी बीबियों को खुश करने के लिए वह चीज अपने पर नाजायज समझता है, जो

अल्लाह ने तुझ पर जायज की- अल्लाह ने तुम्हारी कसमों के तोड़ने की मंजूरी दे दी है। रसूल ने एक राज़ (भेद) अपनी बीबी को बताया था, उसने दूसरी बीबी से उस राज़ के एक हिस्से का जिक्र किया और दूसरा अपने दिल में रक्खा | इस पर अल्लाह ने पूछा कि आपको किसने बतलाया ? तब उन्होंनें जबाब दिया,कि - रसूल ने ! उसके बाद अल्ला ने जो सर्वव्यापक है और सर्वगुण सम्पन्न है कहा कि- अगर तुम दोनों (बीबियां) तौबा करो- तो अच्छा अन्यथा रसूल ने अगर तुम्हें तलाक दे दिया, तो उसका अल्लाह उसे तुम्हारी जगह पर तुमसे अच्छी बीबियाँ देगा जो अल्लाह की खातिरदारी करने वाली होंगी और ईमान लाने वाली होंगी तथा पाक रहने वाली व विश्वास रखने वाली और पहले शादी हो चुकी है और वह भी जो कुँवारी।

(सूरह तहरीम)

भाइयों क्या आप बतला सकते हैं कि -यह भेद कौन सा था जो एक बीबी ने दूसरी बीबी पर ज़ाहिर किया ? मुहम्मद ने कौन सी जायज चीज अपने ऊपर नाजायज कर ली ? गरीब बीवियों को अल्ला से झाड़ क्यों दिलवाई गयी ?

हदीसों में आया हैं की एक दिन जब मुहम्मद की “हफसा" से मिलने की बारी आई तो हफसा पहले ही छुट्टी लेकर नइहर चली गयी और उसके घर (कोठरी)में मुहम्मद ने “मारिया” से घर बसा लिया, इतने में “हफसा” आ गयी वह मौहम्मद का यह मन्जर देख कर जल भुन गयी कि, उसको आरामगाह एक अविवाहित स्त्री से भरी हुई है, हाफ़सा के इस गुस्से को मुहम्मद तुरन्त ताड़् गया और कहा- भागवान ! अगर मारिया के इस हाल का जिक्र तुम किसी से न करो, तो मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि फिर आगे से मारिया के साथ कभी भी सरोहबत न होगी और मेरे बाद खिलाफत का हक़ तुम्हारे बाप का

होगा ! पाठकों ! बात थी, टल गई लेकिन "हफसा" को अपने पर काबू न रह सका। और उसने इस समाचार को

हंदीस मुस्लिम तफ़्सीर हुसेनी,।

स्वरुप आयशा की निगरानी में बीकिसों को एक कॉसिल हुई जिसमें सबने मुहम्मद से मुंह फंर लेने का निर्णय लिया। मुहम्मद पैगम्बर ! और उस पर भी मदीना का एक मात्र बादशाह ? उसने कहा कि ये बीबियाँ कौन से खेत की मूली हैं, जो मुझसे रुखाई का बर्ताव करें ? उसने फौरन "वही" इल्हाम वाले हथियार का प्रयोग किया और उसके आधार पर सब बीबियों का बायकाट करे दिया और महीने भर के लिए मारिया के यहाँ डेरा डाल दिया तथा उन बीबीयों के वालिदों से कहा कि लो बिगाड़ लो, जो तुम लोग मेरा कुछ बिगाड़ सको। इस पर बहुत पेचीदा हालत हो गयी, उधर अबू बकर नाराज, उमर नाराज, उस्मान नाराज, कि एक लॉडी की खातिर हमारी बेटियों से ताल्लुक छोड़ दिया है। महीना भर की जुदाई के बाद मुहम्मद का दिल भी मुलायम हो ग़या(जो हफ़्सा के तेज तरार गुस्से से अच्छी तरह वाक़िफ था)और कहने लगा कि अल्ला ने सिफारिश की हैं कि हफसा का कसूर माफ और उसके साथ उसकी सब बहिनों का कसूर माफ ! खुदा-खुदा करके रसूल के घर अमन (चेन) हुआ-झगड़ा मिटा। "मारिया" से खास मुहब्बत होने का एक कारण यह भी था कि उसके पेट से बच्चा पैदा हो गया। मुहम्मद के लड़कियां तो थीं लेकिन लड़के होकर मर गये थे, मुहम्मद को वारिस मिला, शायद काम का भी वारिस, जायदाद का भी वारिस, मकदूजातका और बड़ी बात तो यह थी कि खानदान की आन बान का भी वारिस ! लडका कौन नही चाहता ?

सैयद अमीर अली कहते हैं कि सँभव है कि मुहम्मद ने बाज शादियाँ इसलिए ही को होंगी कि उसे औलाद नरीना (अच्छी

सन्तान) पाने की आरजू थी, वह आरजू भी किसी दूसरी बीबी को हासिल नहीं हुई, अगर हुई भी तो बह भी उस लौंडी (मारिया) ही के भाग में पड़ी उसके उस नवजात पुत्र का नाम "इब्राहिम" रकखा गया जिसे पालने के लिए बकरियों का एक रेवड तैनात किया गया।

एक दिन मुहम्मद इब्राहिम को आयशा (अपनी दूसरी बीबी) के पास ले गया और उससे कहा कि- देख मुहम्मद की निशानी है या नहीं ? खदोखाल [सूरत-शकल) मेंरुप रंग में हूबहू मुहम्मर है। आयशा को सौतिन के लडुके से नफ़रत थी | उसने कहा कि इसे किसी और की समता (बराबरी) दो, ताहक में अपनी सूरत की तौहीन मत करो, मुहम्मद ने उसका मोटा ताजा होने का इशारा किया, कि देख कैसा बलवान लडुका है ? इस पर आयशा बोली- किसी की खुराक में बकरियों का रेवड (गोल) दे दो तो वह भी फूल जायेगा।

हमने इस बात का जिक्र इसलिए किया है कि बहुत बीबी वालों को शिक्षा मिले। बाप ने औलाद की शक्ल देखकर आँखों से ठंडक पायी, दिल में खुशी मनाई, और नजर में नूर की रोशनी का ज्ञान कर रहा है। और उधर बीवी है कि सौत (सौकन) की डाह (ट्वेष) से जली जाती है। इब्राहिम की बदकिस्मती ही कहिये कि वह भी थोडे दिन जिन्दा रहकर माँ-बाप् को छोड़कर चल बसा, मुहम्मद की आँखें आंसुओं से डबडबा गई, नूर-पीरों, फ़कीरों ने अर्ज की कि आप तो हमें सब्र करने का पाठ पढ़ात थे, और आज आपको क्या हुआ ? तब हजरत ने फरमाया और पैगम्बरी शान से फरमाया कि आखिर में भी तो इन्सान हूँ, यहूदी आह जारी से मना करता हूँ, यह कौन कहता है कि जजबात (प्रेम) से दिल को खाली कर दो।

"मुहम्मद मुझ लेखक को तुमसे प्यार है और वह इसलिए है कि तू भी तो आखिर इन्सान है, तुझे भी औलाद की आरजू है और बेटे

के मर जाने का गम है, हाँ ! अगर कुदरत के कानून के मुताबिक तू भी अमल करता और उस परमात्मा के नियम को न तोड़ता तो पस्मात्मा तेरी भी झोली रक्षा के मोतियों से भर देता।"

हम हैरान हैं कि आखिर इस कतबी लौंडी के माजरे पर लोग क्यों ऊंगली उठाते हैं ? खुद मुसलमान इसे काले हाथ की तरह जेब में छिपते हैं.हम तो कहते हैं कन्या तो लोंडी रखने की रस्म कुरान से मिटाओ अन्यथा जब यह नहीं हो सकता तो "हफसा" का गम और गुस्सा तथा उसका ऊपर कहा गया कथन बिल्कुल जायज है।

क्योंकि मौहम्मद की काली करतूतों से उसकी शान व जौजियात में फर्क आ गया था, कि एक अंदना सी लौंडी उसके कमरे में निवास करे ? आयशा का गम व गुस्सा भी जायज था कि उसकी एक बहन कौ तौहीन हुई, उसकीजोजियात की तौहीन हुई, यही हक जौजियात उसका अपना था | उसका कौन सा हक जौजियात मारा गया । जैनब जब बगैर शादी के भी जायज पत्नी थी तो मारिया क्यों नहीं ? अल्लाह ने उसका भी निकाह पढ़ दिया। जहां दो दिल मिल गये वहां अल्लाह ही काज़ी है और जिब्राइल गवाह है इस बात का कि "मारिया" मुहम्मद की बीबी है।

"बीबियों वाला हज़रत मुहम्मद"

सभी हिन्दू लोग श्री कृष्ण को "बाँसुरी वाला" कहते हैं। बाँसुरी ही श्री कृष्ण की अजमत (प्रशंसा) है। वुन्दावन के जंगल, गायों के गल्ले, ग्वालों के लड्के और लड्कियाँ, अयाना (अजीब) बाँसुरी लिए खड़े हैं, और जंगल की चारों दिशाएँ गूंज रही हैं, एक राग है कि जमीन व आसमान पर छाया हुआ है की ग्वाले मस्त, ग्वालिनें मस्त,

गायें मस्त यहां तक की जंगल के पेड और पत्ते तक मस्त हैं | यह कृष्ण का बचपन है। जवानी आई तो कंस को मारा, और जरासन्ध को मारा, वहाँ भी युद्ध के लिए रणभेरी इसी बाँसुरी ने फूंकी थी, परन्तु जब श्र कृष्ण जी बूढ़े हुए तो जवानी की उमंगें' की जगह बुढ़ापे ने ले ली। अब वही बाँसुरी सभ्यता की जय में बिगड़ी को बनाती है भटके हुए (अर्जुन) को रास्ता बताती है। कुरूक्षेत्र के मैदान में और कौन बोल रहा था ? यही बाँसुरी तो थी, जिसके शब्द ईश्वरीय शब्द कहलायें जो भगवदगीता के रुप में मौजद हैं, इसी भगवदगीता के मानी है, "रहमानी नगमा" यही आज का कृष्ण है, जिन्दा : कृष्ण। आँखों के आगे, कानों के पास मौजूद कृष्ण, आह !! जिसकी अजमत का एक शब्द कहा और कृष्ण की सारी जिन्दगी का नक्शा सामने आ गया, वह शब्द क्या है ? वह है "बाँसुरी वाला" आह ! क्या प्यारा नाम है ?

अब आप गुरू गोविन्द सिंह जी को ही ले लीजिये जो "कलंगी वाला" कहलाता है। बादशाह तो इनसे पहले गुरू भी थे लेकिन कलैंगी (ताज) सबसे पहले गुरू गोविन्द सिंह जी ने ही रक्खी थी। दूसरे खुद मुख्त्यार कहां थे ? गुरू ने बाकायदा मैदान मारे और किसी के कब्जे में न आया, यही गुरू का यज्ञ था। यही लडाईयां थीं। कुरबानी थी और यही मौत व आजादी थी ! खुद मुख्त्यारी एक लफ्ज (शब्द) में यह सारे जाकयात शामिल

हुए हैं जैसे फोनोग्राफ के रिकार्ड शाखा में गीत "कलंगीवाला" कहा है, और गुरू गोविन्द सिंह का मतलब जिदूदो जहद और जंगबदल युद्ध क्रांति आदि मब कह. दिये

ऋषि दयानन्द का नाम पंजाब में "वेदों वाले" पड़ने लगा है, ऋषि का काम-वेद, ऋषि का पैगाम-वेद, ऋषि "की हयात (जीवन) ऋषि की वफात (मौत) केवल वेद के
प्रचार का कारण थी। ऋषि का श्वांस-श्वांस वेदों का मंत्र था। "बेदों बाला" मन भावना, नाम है यह नाम लिया और उसके दिल को पा लिया अर्थात् ऋषि की रूह को समझ लिया |

परन्त मेरी समझ में नहीं आता है कि मैं अपने प्यारे मुहम्मद को ऐसा कौन सा नाम दूं जिसमें मुहम्मद की जिन्दगीका पूरा फोटो आँखों में उतर आये। मैंने मुहम्मद की जीवनी शुरू से अन्त तक पढ़ी, बड़े ही मजे ले लेकर पढ़ी तथा बड़ी ही मुहब्बत से पढ़ी, हकीकत (विश्वास) से पढ़ी और जानना चाहा कि आखिर वह ऐसा कौन सा तार है अर्थात्

वह ऐसा कौन सा धागा है जिसमें मुहम्मद की जिन्दगी का फल पिरोया जा सके ? जिसमें ख्यालात के नक्शे बन जायें तथा कर्म और वाणी जीती जागती तस्वीरें बन कर
हाजिर हों। मुहम्मद की जिन्दगी का पहला परदा उस समय उठता है ज़ब उसने माई खुदीजा के साथ शादी करने की ठानी। इससे पहले की कार्यवाही इस शादी की एकमात्र तैयारी थी, हजरत ने खुदीजा से शादी की और मुहम्मद "पैगम्बर" जन गये।मुहम्मद की पैगम्बरी को सबसे पहिले किसने माना ? ट्सकी बीबी खुदीजा ने। पैगाम्बरी में उसकी पीठ सबसे पहले किसने ठोकी ? खुदीजा ने। मक्का की अदावत से उसकी रक्षा किसने की ? खुदीजा के रसूक ने।

मैं कहता हूँ कि २५ साल की उमर से लेकर ५० साल तक की उमर 'तक मुहम्मद की जिन्दगी में असर कोई कमाल हैं, तो वह

कमाल केवल खुदीजा का हैं। कहते हैं कि मुहम्मद उस वक्त वाकई पैगम्बर था, अगर यह सच है, तो वाकई वह पैगाम्बरी खुदीजा की ही देन थी।

परन्तु जब खुदीजा मर गई, तो मुहम्मद ने मक्का से हिज़रत की, और उसके बाद -माई **"सूदा"** से शादी की,"आयशा" से शादी की, "हफसा" से शादी की। जैनब नं० १ "उर्फ-सलमा (बेटे की बहु)" से, जेनब नं० २ "उर्फ-हबीबी (दूसरे की बीबी) से, "मैमना" से, "ज्वेरिया" से, इन सबसे तो शादीयां की और कवती लॉडी "मारिया" को यों ही (बिना शादी किये) अपने घर में रख लिया ?

मौहम्मद ५० साल का था जब खुदीजा को मौत हुई, तथा ६२ साल का था जब वह खुद मर गया। इन १२ सालों के अरसे में ज़नाब ने १० औरतें कीं, यानी सवा साल में एक औरत ! क्या हम मुहम्मद पर बहुत ब्याह करने का दोष मढ़ रहें हैं ? हरगिज नहीं, जुबान जल जाय, अगर एक बात भी मुहम्मद के हक में विश्वास के विरूद्ध कोई बात जुबान पर आ तो जाय। और महात्मा गाँधी नें उसे पवित्रता की सृष्टि कहा है। मुहम्मर आप पाक, उसका ख्याल पाक, तब परमात्मा की पवित्र सृष्टि पर उसकी दृष्टि न पड़ती तो और किस पर पड़ती ?

हेनरी अष्टम जो इंगलिस्तान का बादशाह था उसकी सारी उम्र शादी और तलाक में गुजरी उसकी बादशाहत के हालात लम्बे चौडे थे जिन्हें याद करना भी मुश्किल था आखिर मैंने इस तीर को पकड़ा, उसकी बीबियों के नाम याद कर लिये, उनके हासिल करने और अपने से अलग कर देनें के ढंग याद कर लिए इसमें हेनरी की वाकयात पे भरी तवारिख (इतिहास) सब याद हो गई।

हेनरी अष्टम ने ६ शादियाँ की और उनमें हो सारी उम्र खतम की थी, मुहम्मद ने सिर्फ १२ साल में उनसे कहाँ ज्यादा शादियां की हैं। बस ! मुहम्मद की जिन्दगी हेनरी अष्टम की जिन्दगी से निस्बत (मुकाबले) में कहीं ज्यादा रंगीन कही जा सकती है।

मिसाल के तौर पर किसी लडाई में हज़रत को फतह हासिल हुई। तो माना गया कि परमात्मा की पत्रित्र सृष्टि की सुन्दरता आँखों के सामने आयी है। बस ! फिर क्या था ? वहीं महफिल जम गई, और लडाई में जिनके इष्ट मित्र खो गये थे वह तो रो रहे हैं। यतिमों को बाय का गम, विधवाओं को पतियों का गम, परन्तु क्या रंगीला रसूल मातम पुरसी (शोकग्रस्तियों के साथ सहानुभूति) दिखाता है ? हरम (ज़नानखाना) भी बढ़ाता है, आठों पहर दूल्हा बना हुआ है, दावतें उड़ रही हैं, दो खजूरें खाई और बीबी घर में रख ली, कई अभागिनों तो सुहागिनी हो गई।

हज़रत आयशा मुहम्मद की सबसे प्यारी बीबी फ़रमाती है कि मुहम्मद को तीन चीजें प्यारी थीं | प्रथम औरत, दूसरे इत्र आदि, तीसरे खाना। खाने पीने की तो कमी ही न रही, रही इत्र आदि की बात! वह तो इच्छानुसार ही मिला क्योंकि औरतें तो हजरत के लिए पसंदीदा खेल थीं।

इन हालातों में अगर मैं अपने इस रंगीले रसूल को "बीबियों वाला" कह दूँ तो कया वाजिंब (उचित) न होगा ? बीबियों वाला कहा और मुहम्मद को पा लिया,मुहम्मद की रूह को पा लिया। उसकी असली रंगीली तसवीर आखों के सामने आकर खड़ी हो गयी। जैसे कृष्ण: **"बाँसुरी वाला"** है, गुरू गोविन्द सिंह **"कलगी वाला"** है, राम **"कमान वाला"** है, दयानन्द **"वेदों वाला"** है, वैसे ही मुहम्मद **"बीबियों वाला"** है जो सब मुहम्मद पैगाम्बरों की शान है

और मुहम्मद को शान उसकी बीबियाँ हैं इसलिए - बोलो ! "बीबियों वाले की जय"।

"मुहम्मद का तजुर्बा"

मैं मुहम्मद पर क्यों फिदा होता हूँ ? क्या इसलिए कि उसने १२ बीबियाँ की थीं ? नहीं-नहीं, भाईयों में आप लोगों को आगाह (ख़बरदार) कर देना चाहता हूँ कि- बीबियों से घर भर लेना कोई बुज़ुर्गी नहीं है। हम पहले ही कह आये हैं कि यह थूक मुहम्मद के लिये कड़वा घूँट था बल्कि मुहम्मद की बडाई उसमें है कि उसने इस कडुवे घूँट से दवाई का काम लिया। ज्यों-२ तजुर्बा बढ़ा त्यों-२ बहुत सी बातों का कायल होता गया। अर्थात् अपनी गलती मानता गया। पहले तो मौमिनों की बीबियों पर संख्या की कोई कैद (शर्त) न थी परन्तु बाद में चार की आज्ञा दी।

"सूरये निसा-आयत४"

इस पर भी यह शर्त लगाई कि-"अगर तुम उन्हीं में न्याय कर सको तो तभी इतनी बीबियाँ करना"। यही नहीं इसी सूरये में बल्कि इसी साँस में कहा हैं कि - "इन्साफ (न्याय) न कर सकोगे "। भाइयों मैं कहना चाहता हूँ कि यह बहुत सी शादियों की रूकावट न थी तो और क्या था ? अपने आप तो बुढ़ापे से मजबूर था. कि जिस्म (शरीर). के साथ कल्पना शक्ति भी क्षीण हो. गई थी परन्तु जो' आदत पड़ गई, उसके लिए क्याकिया जावे ? उसे इस उम्र में बदलना बहुत मुश्किल था। हाँ अपने अनुयाइयों के लिए "मन नकर्दम शुभा हुजूर वकुनदे" (मैंने

तो परहेज नहीं किया तुप करना) का मसला छोड गया और आप भी अगर पहिले जनम की कार्यवाहियों को याद कर दूसरा जन्म लेता तो एक से अधिक स्त्रियां रखने से कानों पर हाथ रखता। क्या!

"मारिया"का मामला उसे याद न था ? जब सारी कि सारी बीबियों ने साजिश करके बूढ़े की नाक में दम कर दिया था। खाना खराबी अलग, इज्जत की बरबादी अलग, फिर यह भी खैरियत थी कि किसी स्त्री से लड़का पैदा नहीं हुआ था वरना इब्राहिम का आयशा के सामने लाया जाना और उसका उसकी सूरत शकल देखकर नाक भी चढ़ाना ! अक्लमन्दों को इशारा ही काफी है, अली और आयशा में भी एक वाह (घृणा सुचक शब्द) जो मुहम्मद को छाती में रोजाना खटका करता था उसे मालूम था कि में अपने दीन के मकल्लिदों (अनुयाइयों) को एक घुन लगा चला हूँ जो इन्हें धीरे-धीरे बरबाद कर देगा।

इस पर सवाल हो सकता हैं कि साफ शब्दों में अधिक बीबियाँ करने की रुकावट क्यों न कर दी ? परन्तु हजरत की ऐसी साफगोई (स्पष्ट भाषण) में अपनी मिसाल मानय (रुकावट डालने बाली) थी। स्वयं १२ बीबियाँ करने वाला दूसरों को शिक्षा दे कि तुम एक से ज्यादा न करों, कुछ हद से ज्यादा जुर्रत (ताकत) का काम था। उसे अपनी पैगाम्बरी कौ फ़जीलत (बुजुर्गी) आम मुसलमानों से तिगने की आज्ञा तो दी गई इससे ज्यादा की "खातिमुलमर सलीन" (आखिरी पैगेम्बर) को आज्ञा देना उसकी खास शान भी तो नहीं ही सकती थी | हम **सैयद अमीर अली** के साथ सहमत हैं कि इस आयत के कुछ मायने नहीं ! अगर इसमें ज्यादा शादी करने की रोक टोक नहीं, हा। ! शब्दों में ढील रह गई, जिसका बुरा नतीजा इस्लाम आज तक उठा रहा है। मुल्ला इन्साफ के माने (अर्थ) लेते हैं "खाने पीने का प्रबन्ध कर देना" हालांकि सैयद अमीर अली इस शब्द से मुहब्बत की मसाबात

(बराबरी) दिली जोश तक में रुरिआयत न रखना आदि-२ मुराद (आशय) लेते हैं उसका कौल(कथन) है कि ऐसा न्याय मुनष्य शक्ति से बाहर है। इसलिए कुरान की यह आयत **“बहु विवाह”** की स्पष्ट रूकावट है। हम “सैयद अमीर अली साहब” के ख्याल को सही मानते हैं। वह इसलिए कि मुहम्मद को इस उमर में हूरों की याद भी नहीं आई, जबकि दुसरी तरफ जमील जो हूरों से तंग आया हुआ बहिस्त में भी कानों पर हाथ धरता है।

अगर पहले इस्लाम मुहम्मद की हिदायत (नसीहत) पर अमल नहीं करते और फकीरों की तशरीही (साफ़ ब्यानी) ने मुहम्मी शादी को एक बहुत पेंच दरपेंच मसला (विचारणीय विषय) बना दिया है तो इसमें जिम्मेदारी कुछ तो अहले इस्लाम की अपनी सभ्यता कौ कमजोरी पर है जिन्होंने खलीफों की इन्द्रीय लोलुपता के लिहाज में आकर जायज को नाजायज करार दे दिया और फिर इस रिवाज का बहुत बुरा फायदा खुद उठा रहे हैं और कुछ नसीहत में इशारा तक ही सन्ंतोष किये जाने का अवगुण है। तो भी इस सत्यता के लिए हम मुहम्मद को तारीफ किए बिना नहीं रह सकते और अपने. मुसलमान भाइयों को सलाह देते हैं कि इस **“रंगीले रसूल”** की जिन्दगी से नसीहत (शिक्षा) हासिल करें और उसकी दोस्ताना शिक्षा पर उसके शब्दोंपर उल्टे सीधे स्वप्नफल (इल्हाम) पर अमल न करें।

मुझे मुहम्मद पर क्यों यकीदा है ? क्या इसलिए कि उसने अपने हमजिन्सों (अनुयाइयों) को औरतों के तलाक की इजाजत दी है और मैं उसका हमजिन्स हूँ। नहीं! नहीं !। बल्कि तलाक की इजाजत से तो शादी एक आरजी (बनावटी) रिश्ता रह जाता है और गृहस्थी का प्रबन्ध स्थाई रूप से नहीं होता। बेगम साहिबो भूपाल ! का तजुरबा जो उम्हें अरब के हज करने के दौरान अरब की औरतों के बारे में हुआ है

वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब शादी बच्चों का खेल हो तो उसमें गम्भीरता आ ही नहीं सकती यह कारण है कि बेगम साहिबा को अरब में बहुत कम ऐसो औरतें मिली जिन्होंने दो से कम पति किये हों ब्लकि इसके विरूद्ध १०-१० पतियों की घरवालियाँ भी देखने में आयी। जब एक जाति (विशेष) को तलाक कीली छूट दे दी जाबे और दूसरी को पतिव्रता रहने का पाबन्द किया जावे, तो वह दूसरी (पतिव्रता) भी अपनी मुखालिसा (प्रेमालाप) का बहाना "निकाल ही लेगी।

हमें देखना यह हे कि मुहम्मद इस बारे में क्या कहता है ? क़ुरान में पहला जिक्र औरत का वहां आता है जहां उसे मंजूरी देने की ताकीद (ज़िंद) की गई है।

सूरयेनिसा

पैसे देकर अस्तीत्व खरीदने में पाप नहीं समझा। अतएव जबर्दस्ती से कुछ अच्छी ही सूरत है। अस्तीत्व की कीमत लगाई है, यही सही रसूल के जिन्स अनास (प्रिय वस्तु) पर अगणित रहमत है, यह हुई. रहमत नम्बर एक। इसी को अरबी जुबान में "मततअ" कहा गया है। ईरान में अब तक इसका रिवाज है, लेकिन इरानियों का गुनाह मुहम्मद के मत्थे नहीं मढ़ा जा सकता, क्योंकिईरानियों ने तो एक आयत पढ़ी और बस चहीं गुलमुहम्मद हो गये।

मुहम्मद ने आगे तरक्की की, शादी को, इस आरजी (बनावटी) क्षणिक रिश्ते से ज्यादा समय वाला बनाया, यहां तक की तलाक पर अददें (संख्या) लगा दी ताकि कोई मियाँ अगर अपनी बीबी से रुठ गया हो और उसका दिल तलाक के बाद भी दोबारा उसी की तरफ चला जाये तो कहीं कमान से निकले हुए तीर का उदाहरण न हो

जाय इसलिए साफ कह दिया कि पहले तीन तलाकों में हर एक के बाद तीन-तीन माह तक बगैर शादी किये रहना चाहिए परन्तु यह कानून सिर्फ़ औरतों के लिए है, मर्दों के लिए नहीं ! वह अगर दो भी कर लेगा तो भी कुरान की हद (सीमा)में ही रहेगा, एक आयत की न सही दूसरी आयत की सही। क्या खरा मजाक है ?

यही नहीं फिर ‘‘हलाला’’ की क़ैद (पाबन्दी) लगाई है कि अगर कोई नटखट शौहर ऐसा ही हो कि बार-बार तलाक देता जाय तो उसे तीसरी बार यह काम करते हुए कुछ झिझक हो, अतः कानून बना दिया कि तीसरे तलाक का के बाद बीबी अपने खाबिन्द से उस्त समय ब्याही जाये जब उम्र की निस्ब़त (प्रेम सम्बन्ध) दुसरे आदमी से हो जाये, यहां नहीं एक साथ बसंग (एक बिस्तर पर रात गुजार लें) भी कर लेवें।

‘‘सूरये बकर रकुअ २९’’

लोग कहेंगे कि यह रस्म तो लज्जाहीन है ‘‘सैयद अमीर अली’’ लिखते हैं कि यह अरब की शर्म (लाज) को उकसावा देने के लिए है। रसूल का मतलब यह था कि दो से ज्यादा तलाक किसी औरत को न मिलें।‘‘हलाला’’ अमल में लाया जायेगा यह कयास (ख्याल) तो रसूल को कभी हुआ ही नहीं।

हमें सही बात मानने में कुछ हर्ज नहीं हम नाहक में अपने मुसलमान भाइयों को हलाला जैसी लज्जाजनक परम्परा का पाबन्द नहीं देखना चाहते। यद्यपि हमारी समझ में इस बुरी रस्म के अदा किये जाने की कुछ मिसालें मौजूद हैं | गलती कानून बनाने में हुई है, मुहम्मद को नीयत का इसमें कुछ भी कसूर नहीं है।

‘‘सैयद अमीर अली'' लिखते हैं, कि इस आयत के आगे फिर एक और आयत निकाह के अध्याय में ही आई है। इससे

"हलाला" के हुक्म को रदूद करना ही समझना चाहिए, यह रबायत आनरेबुल की अकेली राय है। लेकिन हमारी सर आँखों पर ! हम तो सारे कुरान को एक तरफ से मन्सूख (रद्द) करने को तैयार हैं, उनके अपने कुरानी भाई उनकी सलाह मान लें तो "हलाला" से छुट्टी हो भी जाये तो भी तलाक की बला तो सिर पर ही सवार रही, ज्यादा देर न सही दो ही दफा सही। वह अलबत्ता कुछ बुराइवों का कारण है। हजरत ने खुद जैनब (अपनी पुत्र वधु अर्थात् अपने बेटे ज़ैद की बहु) को तलाक दिलबाया था। कहकर न सही, इशारों से ही सही जिसका कुरान ने सारा भेद खोल दिया कि उस समय हज़रत के दिल पर कुछ और ही कैफ़िवत शुजर रही थी। जुबान के बयान से वह कैफ़ियत (दशा) बाहर थी हजरत दिल ही दिल में अपनी इस हरकत से पछताये कि परदे की पाबन्दियाँ सब इस बात कौ गवाह हैं-कि हजरत को अपनी और जंनव की बेबाक (निडर) नजर शाक्र (असह्य) थी। वही बबाक (निडर) नजर ही तो तलाक का कारण बनी थी। हजरत अपनी बीबियों से भी तो नाराज हुए थे जिसके कारण महीने भर तक उन्हें अपने हिज़्र (जुदाई) में और अपने को उनके हिज़्र में तड़फाया था। उस समय तलाक क्यों न दिया ? बल्कि उल्टा उन सभी बीबियों पर बहुत बिगड़े और अल्लामियाँ की मारफत चिट्ठी पत्री यानी सन्देश भेजे और तलाक की धमकी भी दी लेकिन तलाक नहीं दिया , रबायत [(पाठ)इस प्रकार है कि- "जब सूदा बूढ़ी हो गई तो हज़रत उसे तलाक देने पर तैयार हो गये लेकिन सूदा ने अपना नम्बर आयशा के लिए बदल दिया, और अल्लामियाँ की सिफारिश से मुहम्मद तलाक की गुनाह से और सूदा बेकसाना बारी के अज़ाब (पाप) से बच गई"।

"मुस्लिम जिल्द रकूब"

असल में मुहम्मद तलाक को बुरा मानते थे। अजी एक हदीस मौजूद है और हम तो कुरान को भी हदीस ही समझते है क्यों कि अल्लामियाँ को कोई चीज ऐसी नाखुश नहीं करती जेसी अपनी घरबाली को तलाक देना अर्थात् कोई ऐसे खुश नहीं करती जैसे गुलाम को आजाद करना।

"इब्नमाजा अवाबाबुल निकाह"

हजरत ने मरते दम तक खुदा को खुश रकखा, हजरत ने जी भर कर बीबियाँ की और उनमें से एक को भी तलाक नहीं दिया। वाह ! आले मुहम्मद ! उम्मत (धर्मानुयायी) मुहम्मद !! मुहम्मद की अकल पर पास (निरीक्षण) करो। तलाक नाजायज ! तलाक नाजायज !! तलाक बिल्कुल नाजायज !!!

नोट :- अब आप हज़रत मौहम्मद साहब के बारे में विशेष जानकारी व उनके रंगीले जीवन के विशेष अनुभवों का अवलोकन भी अगले पृष्ठों में करें ! धन्यवाद ! !

कौसे कज़ा (इन्द्रधनुष)

१. पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करिये, जेसे मुहम्मद ने अपनी जिन्दगी के २५ वर्ष बहाचर्यपूर्वक गुज़ारे, मगर हाँ कभी दिल में काली रात के शुगल (काम वासना सम्बन्धी मनोंरजन) का ध्यान न लाना।

२. अपने जीवन में भूल कर भी चालीस वर्ष की बुढिया से शादी न करियो, बल्कि अगर किसी बुजुर्ग स्त्री की गोद में लेटना ही हो व अपने

(यतीमी) अनाथपन का गम मिटाना ही हो तो उसे माँ बना लीजियो परन्तु बीबीकदापि नहीं।

३. किसी खेलती गुडिया से शादी न करिये नहीं तो गुडिया खेलती होगी और अगर पीछे (विधवा के रुप में)रही तो सिर को रोबेगी, हाँ! अगरचे उस पर दिल आ ही जावे तो उसे अपनी लड़की बना लीजिए।

४. बहू अपने लड़के की बीबी. हो या गोद लिए हुए (मुतबन्ने) की बहू हो उसे अपनी लड़की ही समझियो नहीं तो नाहक में ही चिकें (परदे) डलवाता फिरेगा। तथा दुनियाँ भर में हुस्न पर परदे और पहरे लगवाता फिरेगा।

५. लौंडी जायज नहीं होती उसकी औलाद को बीबियाँतस्लीम (स्वीकार) नहीं करतीं, उसके सुहाग से भी जलती हैं और दूल्हे की इशरत (भोग बिलास) में दखल देती हैं।

६. बीबी एक से ज्यादा अजाब (झगड़ा), घर का अजाब, बाहर का अजाब, रुह का अजाब, न खिलवत (तनहाई) में चैन न जलवत (महफिल) में चैन, जो आपस में लड़ें तो आफत। जो एका (सगंठन) करें तो क्यामत।

७. जैसे अपनी बेवा को दूसरों की माँ कहता है। नहीं बल्कि अल्लामियां से कहलवाता है। ऐसे ही दूसरे की विध्वाओं को भी अपनी मायें समझियो, यह "वही" है अर्थात् यह अल्लामियां का हुक्म

है। अच्छा हज़रत-रुखसत (आज्ञा)। रसालत (पैग़ाम्बरी) के नाटक का यह अदभुत दृश्य खत्म हुआ- फिर कभी किसी दूसरे दृश्य को लेकर हाजिर होंगे, अच्छा ! खुदा हाफ़िज !!।

॥ इति ॥

नोट: पाठक ! अभी तूने अपने प्यारे रसूल के अमृल्य अनुभवों का लाभ उठाया, अब आगे अपने प्यारे, रंगीले, छबीले और रसीले रसूल की रंगीली बातों से भी तो लाभ उठा ताकि तेरा यह मनुष्य जीवन सफल हो सके।

रंगीले रसूल की कुछ रंगीली बातें

१. एक बार हजरत से एक शख्स ने पूछा-या रसूलअल्ला ! मैं औरतों का बड़ा हरीस (भूखा) हूँ इसलिए उन्हें औंधा (उल्टा) डालकर भी जमाअ (संभोग) कपणता हूँ इसमें आप क्या फरमाते हैं ? इसी सवाल के वास्ते हज़रत के द्वारा तभी एक आयत नाज़िल हुई कि- "औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं उन पर, जिधर से चाहो उधर से जमाअ (संभोग) करो" | हजरत ने यह भी फरमाया कि "अपनी ओर से चित्त-पट अर्थात् किसी भी स्थिति में जमाअ
(संभोग) करना दुरस्त है"।

"""दरमन्सूर जिल्दअव्वल मतब्ुआमिसर सफा २६२"

२. एक औरत ने हजरत से पूछा कि-हजूर ! हमारा शौहर हमसे चित्त-पट दोनों तरफ से जमाअ (संभोग) करता है. कया यह वाज़िब है ? तब हजरत ने फरमाया कि-- “क्या हरज है अगर सुराख वाहद (एक) हो" ?

३. एक व्यक्ति ने हुजूर से पूछा कि हाथ से काम अर्थात् हस्तमैथुन करने पर क्या रोजे को ज़लक नहीं लगता अर्थात् रोजा नहीं टूटला ? तब हज़रत ने फ़रमाया कि- “गैरइन्जाल (वीर्य न निकलने की स्थिति) में जायज है” । आगे फिर इसी सवाल के जवाब में हजरत ने यह भी कहा है कि-“सोहचत तेज करने के हिसाब से तो जायज नहीं | हाँ अगर तस्कौन सोहवत (संभोग की तसलली को गरज से किया जाये तो जलक लगानेवाला (हस्त मैथुन करने वाला) शुनहगार न हांगा । तथा जब किसी चौपाये (जानवर) वामियत से जमाअ (संभोग) किया जाय और खलास न हो तो उस स्थिति में रोजा फासिद
(खराब) नहीं होता" ।
“दरमन्सूर सफा२६२ फातावी-काजीखाँ जिल्दअव्वल-किताबुलसोम-फस्लखामिस "

४. एक रोज हज़रत की खिदमत में सफबान बिनमुअतल की जीजी उस वक्त हाजिर हुई जब हजरत्त रजीउल्ला भी वहाँ हाजिर थे, तब उनको बीबी ने पूछा या रसूलल्ला! जब मैं नमाज पढ़ती हूँ, तो मुझे जमाअ (संभोग) न कराने पर नमाज नहीं पढ़ने देता, मारता है ! जब रोजा रखती हूँ तो जमाअ (संभोग) करके, अफ़तार (खंडित) कर देता है रोजाना सुबह तक मशगूल जमाअ (संभोग में व्यस्त) रहता हैं । इस

वाकया को सुनकर हजरत ने फरमायथा, कि- “कोई औरत बिना इजाजत शौहर के रोजा नमाज न रक्खे "।

“तलवीसुलशहाह जिल्दशाह ४ सफा ४८”

५. एक व्यक्ति ने हज़रत मौहम्मद से अरज किया कि हजूर अगर मर्द कंबल गैरइन्ज़ाल (बिना वीर्यपात हुए) के कारण औरत से जुदा हो जाये तो क्या करे ? इस पर आपने फरमाया कि - “ सिर्फ़ जाकर धी डाले और वजू (हाथ धोकर) करके नमाज़ पढ़ ले !

पाठक ! अब तो तूने एक महान अनुभवी पैगम्बररके महान अनुभव भो प्राप्त कर लिए, इसलिए अब तो कमसे कम तहेदिल से एक बार ज़ोर से कह दे कि-

“महान अनुभवी पैगम्बर की जय” !!

|| समाप्त ||

नोट- इस पुस्तक में जिन-जिन पुस्तकों से हवाले दिये गये हैं उन सबको कंठल "सुन्नी मुसलमान" ही प्रामाणिक मानते हैं।

मुहम्मद रफी